CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ श्रीः ॥

Box/2

सफलता-सोपान

शास्त्री द्वितीयवर्ष

('ख' वर्ग हिन्दी : सप्तम पत्र)

आधुनिक हिन्दी काव्य संग्रह
आधुनिक हिन्दी कविता का इतिहास
आधुनिक हिन्दी कवि-समीक्षा (आलोचना)

नवीन पाठ्यक्रमानुसार लघु एवं अतिलघु प्रश्नोत्तर सहित

लेखक
डॉ. बैजनाथ मिश्र

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परीक्षापयोगी प्रश्नोत्तरात्मक पुस्तकें
(संस्कृत भाषा में)

अभिधावृत्तिमातृका-सोपानम् । डॉ. शिवप्रसाद द्विवेदी
अलङ्कारशास्त्रस्येतिहासः । परमेश्वरदीन पाण्डेय
उत्तररामचरितादर्श । डॉ. रमाशंकर मिश्र
कर्पूरमंजरी-दीपिका । गौरीनाथ मिश्र 'भास्कर'
कादम्बरी-कला-प्रकाशः । डॉ. नरेश झा
कादम्बरी-सोपानम् । शिवप्रसाद द्विवेदी
काव्यप्रकाश-रहस्यम् । श्रीरामजीलाल शर्मा
काव्यमीमांसा-दीपिका । वेदव्यास शुक्ल (१-५ अध्याय)
काव्यशास्त्रस्येतिहास-सोपानम् । डॉ. शिवप्रसाद द्विवेदी
काव्यालङ्कारसूत्रवृत्तेः-आलोकः । (तृतीयाधिकरण प्रश्नोत्तरी) । डॉ. नरेश झा
किरातार्जुनीय-रहस्यम् । डॉ. कृष्णदेव प्रसाद । १-२ सर्ग, ३-६ सर्ग
कुमारसम्भवम्-रहस्यम् । श्री रामप्रसाद त्रिपाठी । १-२ सर्ग
कुवलयानन्दालोकः । डॉ. नरेश झा
चन्द्रकलानाटिका-रहस्यम् । परमेश्वरदीन पाण्डेय
चन्द्रालोक-रहस्यम् । मातृवल्ली तथा बेताल
चम्पूरामायण सोपानम् । डॉ शिवप्रसाद द्विवेदी
तर्कभाषा-सोपानम् । डॉ. शिवप्रसाद द्विवेदी
तर्कसंग्रह-रहस्यम् । श्रीकीर्त्यानन्द झा
दशकुमारचरित-सोपानम् । डॉ. शिवप्रसाद द्विवेदी
ध्वन्यालोक-प्रकाशिका । श्री राजेन्द्रप्रसाद कोठ्यारी
नलचम्पू-रहस्यम् । पं. परमेश्वरदीन पाण्डेय
नाटयशास्त्र-प्रश्नोत्तरी । १-७ अध्याय; १७-२० अध्याय
नैषधीयचरित-प्रश्नोत्तरी । मिश्र एवं द्विवेदी । १-५ सर्ग; १०-१३ सर्ग
परमलघुमञ्जूषा-सोपानम् । डॉ. शिवप्रसाद द्विवेदी
परिभाषेन्दुशेखर-सोपानम् । डॉ. शिवप्रसाद द्विवेदी
पाणिनीयशिक्षा-सोपानम् । डॉ. बालगोविन्द झा
प्रतिमानाटक-रहस्यम् । डॉ. रमाशंकर त्रिपाठी
प्रबन्धसङ्ग्रहः (व्याकरणाचार्य निबन्ध) । डॉ. ब्रह्मानन्द त्रिपाठी
भट्टिकाव्य-दर्पणः । स्वामी प्रज्ञान भिक्षु । १-४ सर्ग, ५-८ सर्ग
भट्टिकाव्यालोकः । डॉ. रमाशङ्कर मिश्र । १४-१७ सर्ग, १८-२२ सर्ग
भारतीयसंस्कृति-सोपानम् । आचार्य शिवप्रसाद द्विवेदी
मध्यसिद्धान्तकौमुदी-चन्द्रिका । आचार्य विजयमित्रशास्त्री (१-४ खण्ड) सम्पूर्ण

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ श्रीः ॥

सफलता-सोपान

(शास्त्री द्वितीय वर्ष)

('ख' वर्ग हिन्दी : सप्तम पत्र)

आधुनिक हिन्दी काव्य संग्रह
आधुनिक हिन्दी कविता का इतिहास
आधुनिक हिन्दी कवि-समीक्षा (आलोचना)

नवीन पाठ्यक्रमानुसार लघु एवं अतिलघु प्रश्नोत्तर सहित

लेखक
डॉ. बैजनाथ मिश्र

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

प्रकाशक CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
(भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक तथा वितरक)
के. 37/117 गोपालमन्दिर लेन
पो. बा. नं. 1129, वाराणसी 221001
दूरभाष : 2335263

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

संस्करण 2009 ई०
मूल्य : 35.00

अन्य प्राप्तिस्थान

चौखम्बा पब्लिशिंग हाउस
4697/2, भू-तल (ग्राउण्ड फ्लोर)
गली नं. 21-ए, अंसारी रोड
दरियागंज, नई दिल्ली 110002
दूरभाष : 32996391
ई-मेल : chaukhamba_neeraj@yahoo.com

❖

चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान
38 यू. ए. बंगलो रोड, जवाहर नगर
पो. बा. नं. 2113
दिल्ली 110007
दूरभाष : 23856391

❖

चौखम्बा विद्याभवन
चौक (बैंक ऑफ बड़ोदा भवन के पीछे)
पो. बा. नं. 1069, वाराणसी 221001
दूरभाष : 2420404

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषयानुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
आधुनिक हिन्दी काव्य-संग्रह	
१. आधुनिक हिन्दी कविता का इतिहास	१
आधुनिक हिन्दी कवि-समीक्षा	
२. मैथिलीशरण गुप्त : काव्य-सौन्दर्य तथा साहित्यिक विशेषताएँ	३
३. उर्मिला-विरह वर्णन	६
४. जयशंकर प्रसाद : काव्य-सौन्दर्य तथा साहित्यिक विशेषताएँ	७
५. श्रद्धा का काव्य-सौन्दर्य	९
६. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' : काव्य-सौन्दर्य तथा साहित्यिक विशेषताएँ	१२
७. राम की शक्तिपूजा	१४
८. सुमित्रानन्दन पन्त : काव्य-सौन्दर्य तथा साहित्यिक विशेषताएँ	१६
९. महादेवी वर्मा : काव्य-सौन्दर्य तथा साहित्यिक विशेषताएँ	१८
१०. सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' : काव्य-सौन्दर्य तथा साहित्यिक विशेषताएँ	२०
आधुनिक हिन्दी साहित्य के वाद	
१. रहस्यवाद	२१
२. छायावाद	२३
३. प्रगतिवाद	२५
४. प्रयोगवाद	२७
प्रमुख स्थलों की सप्रसंग व्याख्या	
१. वेदने ! तू भी······मेरी तपन मनी।	२९
२. सखि ! नील नभस्सर······डरता-डरता।	२९
३. मुझे फूल मत······सिर पर धारो।	३०
४. बीती विभावरी······रसगागरी।	३१

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रकाशक
चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
(भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक तथा वितरक)
के. 37/117 गोपालमन्दिर लेन
पो. बा. नं. 1129, वाराणसी 221001
दूरभाष : 2335263

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

संस्करण 2009 ई०
मूल्य : 35.00

अन्य प्राप्तिस्थान
चौखम्बा पब्लिशिंग हाउस
4697/2, भू-तल (ग्राउण्ड फ्लोर)
गली नं. 21-ए, अंसारी रोड
दरियागंज, नई दिल्ली 110002
दूरभाष : 32996391
ई-मेल : chaukhamba_neeraj@yahoo.com

❖

चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान
38 यू. ए. बंगलो रोड, जवाहर नगर
पो. बा. नं. 2113
दिल्ली 110007
दूरभाष : 23856391

❖

चौखम्बा विद्याभवन
चौक (बैंक ऑफ बड़ोदा भवन के पीछे)
पो. बा. नं. 1069, वाराणसी 221001
दूरभाष : 2420404

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषयानुक्रमणिका

विषय पृष्ठ

आधुनिक हिन्दी काव्य-संग्रह

१. आधुनिक हिन्दी कविता का इतिहास १

आधुनिक हिन्दी कवि-समीक्षा

२. मैथिलीशरण गुप्त : काव्य-सौन्दर्य तथा साहित्यिक विशेषताएँ ३
३. उर्मिला-विरह वर्णन ६
४. जयशंकर प्रसाद : काव्य-सौन्दर्य तथा साहित्यिक विशेषताएँ ७
५. श्रद्धा का काव्य-सौन्दर्य ९
६. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' : काव्य-सौन्दर्य तथा साहित्यिक विशेषताएँ १३
७. राम की शक्तिपूजा १४
८. सुमित्रानन्दन पन्त : काव्य-सौन्दर्य तथा साहित्यिक विशेषताएँ १६
९. महादेवी वर्मा : काव्य-सौन्दर्य तथा साहित्यिक विशेषताएँ १८
१०. सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' : काव्य-सौन्दर्य तथा साहित्यिक विशेषताएँ २०

आधुनिक हिन्दी साहित्य के वाद

१. रहस्यवाद २१
२. छायावाद २३
३. प्रगतिवाद २५
४. प्रयोगवाद २७

प्रमुख स्थलों की सप्रसंग व्याख्या

१. वेदने ! तू भी······मेरी तपन मनी। २९
२. सखि ! नील नभस्सर······डरता-डरता। २९
३. मुझे फूल मत······सिर पर धारो। ३०
४. बीती विभावरी······रसगागरी। ३१

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषय	पृष्ठ
५. कौन हो तुम वसन्त······मंद बयार।	३२
६. भरा था मन में······प्यारी सन्तान।	३२
७. तपस्वी क्यों······कैसा उद्वेग।	३३
८. दुःख की पिछली······सुख गात।	३३
९. प्रकृति के यौवन······उनकी धूल।	३४
१०. डरो मत अरे······सकल समृद्धि।	३४
११. है अमानिशा········जलती मसान।	३५
१२. स्थिर राघवेन्द्र········जो दुराक्रान्त।	३५
१३. कल लड़ने को········छवि, अच्युत।	३६
१४. देखते हुए········प्रथमोत्थान पतन।	३६
१५. काँपते हुए किसलय········कम्पन तुरीय।	३७
१६. सिहरा तन········हृदय में आई भर।	३७
१७. निशि हुई विगत········दृढ़ मुकुटबन्ध।	३८
१८. दिवसावसान का········उसमें हास-विलास।	३८
१९. हँसता है तो केवल······अम्बरपथ से चली।	३९
२०. वह इष्टदेव के······की ही विधवा है।	३९
२१. प्रथम रश्मि का·····यह गाना।	४०
२२. सोई थी तू·····जुगनू नाना।	४०
२३. शान्त स्निग्ध·····विभा से भर।	४०
२४. इस धारा-सा ही·····नौका विहार।	४१
२५. यह मन्दिर का दीप·····गलाने को गलने दो।	४१
२६. चरणों से चिह्नित·····पलने दो।	४२
२७. पल के मन के·····फिर से ढलने दो।	४२
२८. झंझा है दिग्भ्रान्त·····प्रभाती तक चलने दो।	४३
२९. हम नदी के द्वीप·····'धारा नहीं हैं।	४३
३०. लो, पहले अपना·····स्वर बहते हैं।	४४

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ श्रीः ॥

सफलता-सोपान

शास्त्री : द्वितीय वर्ष

('ख' वर्ग हिन्दी : सप्तम पत्र)

आधुनिक हिन्दी काव्य-संग्रह

(१) आधुनिक हिन्दी कविता का इतिहास

यों तो रीतिकाल के अवसान के बाद उन्नीसवीं शताब्दी से ही भारतेन्दु के समय आधुनिक काल का इतिहास प्रारम्भ हो जाता है, परन्तु आधुनिक हिन्दी कविता का इतिहास जगन्नाथदास 'रत्नाकर' से माना जाता है। ये आधुनिक युग के कवियों में खड़ी बोली युग में व्रजभाषा के अन्तिम श्रेष्ठ कवि के रूप में प्रसिद्ध हुए। भक्तिकाल के कवियों के द्वारा वर्णित कृष्ण की बाँसुरी, गोपियों का विरह तथा उद्धव का निर्गुण-सन्देश पुनः इनकी काव्य-वीणा पर सुनाई देने लगा। इनकी प्रसिद्ध कृति है उद्धवशतक, जिसमें उद्धव-गोपी संवाद नवीन रूप में उपस्थित है। इनकी भाषा व्रज तथा शैली कवित्त की है।

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का काव्यक्षेत्र में अच्छा प्रवेश था। सर्वप्रथम ये व्रजभाषा में कविता किया करते थे, परन्तु आचार्य महावीर-प्रसाद द्विवेदी की प्रेरणा से ये खड़ी बोली हिन्दी में कविता करने लगे। इनकी कृतियों में 'प्रिय-प्रवास' संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली का प्रथम बृहत् काव्य है। इस काव्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि समस्त काव्य संस्कृत के वर्णवृत्तों में हैं। इस काव्य में भगवान् कृष्ण लोकरक्षक महापुरुष के रूप में अंकित किये गये हैं।

मैथिलीशरण गुप्त यशस्वी कवि के रूप में विशेष प्रतिष्ठित हुए। इनकी कृतियों में साकेत तथा यशोधरा—दोनों ही चरित्र-प्रधान महनीय काव्य हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुछ विद्वानों के मतानुसार 'साकेत' महाकाव्य की संज्ञा से अलंकृत है। इसकी रचना का मुख्य उद्देश्य यह है कि उर्मिला काव्य की उपेक्षा न रह जाय। इस काव्य में उर्मिला का चरित्र बहुत ही रमणीय है।

आधुनिक हिन्दी साहित्य के कवियों में जयशंकर प्रसाद आधुनिक चेतना के अग्रदूत थे। इसके साथ ही ये इस युग में छायावाद तथा रहस्यवाद के प्रवर्तक भी थे। इनकी कृतियों में लहर, झरना, आंसू तथा कामायनी— इनके जीवन के विकास के चार सोपान हैं। इनमें कामायनी स्पष्ट ही नारी-प्रधान महाकाव्य है, जिसमें १५ सर्ग हैं। इस काव्य का विषय वेदों में वर्णित प्रलय के उपरान्त मनु की सृष्टि वाला कथानक है। मनु, श्रद्धा तथा इडा—इसके प्रधान पात्र हैं।

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' इस युग के विद्रोहशील और क्रान्तिकारी कवि हुए। इनकी कृतियों में परिमल, गीतिका, अनामिका तथा अपरा विशेष प्रसिद्ध हैं। सौन्दर्योपासक कवि होने के कारण सौन्दर्य-चित्रण में इन्हें विशेष सफलता मिली है। इनकी कविताएँ छन्दों के बन्धनों से मुक्त हैं। इनकी कविताओं में संगीत के समान आनन्द मिलता है। इन्होंने रहस्यवाद, छायावाद तथा प्रगतिवाद का भी वर्णन किया है।

सुमित्रानन्दन पन्त सुन्दरं के कवि रूप में प्रसिद्ध हुए, परन्तु इनका सुन्दरं सत्यं-शिवं से शून्य नहीं है। ये मूलतः प्रकृति के कवि हैं। इन्होंने प्रकृति-सुन्दरी को नारी का रूप दिया है, जिससे इनकी कविताओं में छायावाद की अच्छी झलक है। इनकी रचनाओं में पल्लव, पल्लविनी, वीणा, ग्रन्थि, गुञ्जन, युगान्त, युगवाणी, स्वर्णकिरण तथा स्वर्णधूलि आदि विशेष प्रसिद्ध हैं।

आधुनिक युग के कवियों में कवयित्री महादेवी वर्मा बड़ी ही विशिष्ट हुईं। यह इसलिए नहीं कि ये स्त्री हैं, बल्कि इसलिए कि आधुनिक काव्य-कला के शृंगार में जितना अधिक योगदान दिया, उतना किसी अन्य कलाकार ने नहीं। इनकी कृतियों में नीहार, रश्मि, नीरजा, दीपशिखा तथा सान्ध्य गीत आदि विशेष श्लाघ्य हैं। इनकी भाषा सुकोमल, मधुर, प्राञ्जल तथा सौष्ठवपूर्ण है। इनकी शैली में गीत की प्रधानता है। प्रसाद, निराला तथा पन्त—तीनों ने बाह्यपरक रचनाएँ की हैं, परन्तु इन्होंने आत्मपरक रचनाओं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की सृष्टि की है। इनकी कविताओं में रहस्यवाद तथा छायावाद—दोनों की झलक है।

सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' वर्तमान हिन्दी साहित्य में प्रयोगवादी कविताओं के प्रवर्तक के रूप में प्रसिद्ध हुए। तारसप्तक—इनकी प्रसिद्ध कृति है, जिसमें प्रयोगवादी कवियों की कविताओं का संकलन है।

वर्तमान युग के प्रयोगवादी कवियों में गजानन माधव मुक्तिबोध भवानीप्रसाद मिश्र तथा धर्मवीर भारती विशेष प्रसिद्ध हैं।

इस प्रकार आधुनिक हिन्दी कविता पल्लवित तथा पुष्पित हो रही है। इसका भविष्य उज्ज्वल है।

आधुनिक हिन्दी कवि-समीक्षा

(२) मैथिलीशरण गुप्त : काव्य-सौन्दर्य तथा साहित्यिक विशेषताएँ

आधुनिक युग के यशस्वी कवियों में मैथिलीशरण गुप्त का नाम बड़े ही आदर के साथ लिया जाता है। ये हमारे समक्ष राष्ट्रप्रेम सम्बन्धी कविताओं की रचना के कारण राष्ट्रकवि तथा आधुनिक हिन्दी काव्यधारा को नवीन रूप देकर विकसित करने के कारण प्रतिनिधि कवि के रूप में प्रतिष्ठित हैं। इनका काव्यकाल द्विवेदी युग है, जिसके ये प्रसिद्ध कलाकार हैं।

कृतियाँ—गुप्तजी द्वारा लिखित निम्नांकित कृतियाँ विशेष प्रसिद्ध हैं—

भारत-भारती, पंचवटी, रंग में भंग, जयद्रथ वध, द्वापर, साकेत तथा यशोधरा। गुप्तजी की कृतियों में साकेत तथा यशोधरा—दोनों ही चरित्र-प्रधान महनीय काव्य हैं। कुछ विद्वानों के मतानुसार 'साकेत' महाकाव्य की संज्ञा से अलंकृत हैं। इसकी रचना का मुख्य उद्देश्य यह है कि 'उर्मिला काव्य की उपेक्षित' न रह जाय। इस काव्य में उर्मिला का चरित्र बहुत ही रमणीय है। कवि ने इसके नाम की सार्थकता पर प्रकाश डालते हुए इसे 'स्वर्ग का सुमन' कहा है—

'स्वर्ग का यह सुमन धरती पर खिला।
नाम उसका उचित ही है उर्मिला'॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इस काव्य में शृंगार के संयोग तथा वियोग दोनों पक्षों का वर्णन बहुत उत्कृष्ट एवं भावपूर्ण है। सर्वप्रथम संयोग शृंगार का एक चित्र देखिए—

'उर्मिला बोली—अजी तुम जग गये ?
स्वप्ननिधि से नयन कब से लग गये ?
मोहिनी ने मंत्र पढ़ जब से हुआ।
जागरण रुचिकर तुम्हे जब से हुआ' ।।

इस काव्य में संयोग की अपेक्षा वियोग की ही प्रधानता है। कवि ने नवम तथा दशम—दो सर्गों में उर्मिला के वियोग का वर्णन किया है। जब लक्ष्मण अपने ज्येष्ठ भ्राता राम के साथ वन चले जाते हैं, तब विरहाधिक्य के कारण उर्मिला को कभी-कभी ऐसा प्रतीत होता है कि उसके प्रियतम उसके समक्ष खड़े हैं। वह उन्मादावस्था में व्याकुल होकर कहने लगती है—

'प्रभु नहीं फिरे क्या तुम्हीं फिरे।
हम गिरे अहो तो गिरे-गिरे' ।।

कभी विरह से संतप्त होकर अपनी प्रिय सखी सुलक्षणा से कहती है—

'दोनों ओर प्रेम पलता है।
सखि ! पतंग तो जलता ही है, दीपक भी जलता है' ।।

विरहावस्था में एक दिन उर्मिला के निकट कामदेव उपस्थित होकर उसके हृदय में क्षोभ पैदा करने लगता है। सर्वप्रथम तो यह उससे अनुनय-विनय करती है, परन्तु न मानने पर अन्त में उसे फटकारती है—

'मुझे फूल मत मारो।
मैं बाला अबला वियोगिनी, कुछ तो दया विचारो' ।।

× × ×

'रूप दर्प कन्दर्प तुम्हें तो, मेरे पति पर वारो।
लो यह मेरी चरणधूलि, उस रति के सिर पर धारो' ।।

एक आलोचक ने साकेत की आलोचना करते हुए कहा है कि 'साकेत में उर्मिला की तपस्या तपस्विनी उमा की तपस्या की याद दिला देती है। उमा ने अखण्ड तपस्या करके अचल सुहाग पाया, उर्मिला ने अपने अचल सुहाग को ही अखण्ड तपस्या बना दिया। यौवन सुलभ चौदह वर्ष की कठिन तपस्या के बाद जब उसने अपने देवता को पुनः पाया, तब उसके ऐहिक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जीवन में रह ही क्या गया था, दो अश्रुभरी आँखें ही न ?' प्रियतम से मिलन समय उपस्थित होने पर वह अपनी प्रिय सखी से कहती है—

'पर यौवन उन्माद कहाँ से लाऊँगी मैं।
वह खोया धन आज कहाँ सखि पाऊँगी मैं' ॥

गुप्तजी ने 'यशोधरा' नामक काव्य की रचना नाटकीय ढंग पर की है। जिस समय भगवान् बुद्ध मोक्षप्राप्ति के लिए अपनी प्रिय पत्नी यशोधरा और प्रिय पुत्र राहुल को सोते हुए छोड़कर चले जाते हैं, उस समय वह घबड़ाती नहीं है, बल्कि अपने स्वामी की सफलता के लिए शुभकामना करती है। यदि उसे दुःख है, तो केवल इतना ही कि वे उससे कहकर क्यों नहीं गये—

'सिद्धि हेतु स्वामी गये, यह गौरव की बात।
पर चोरी-चोरी गये, यही बड़ा व्याघात ॥
सखि ! वे मुझसे कहकर जाते,
कह, तो क्या मुझको वे पथबाधा ही पाते ?'

इस काव्य का अन्तिम लक्ष्य अबला जीवन की महत्ता स्वीकार करना है—

'अबला जीवन हाय, तुम्हारी यही कहानी।
आँचल में है दूध और आँखों में पानी' ॥

'भारत-भारती' गुप्तजी की लोकप्रियता का महान् काव्य है, जिसमें स्वदेश प्रेम की अच्छी झलक है—

'जिसको न निज गौरव तथा, निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं नरपशु, निरा है और मृतक समान है' ॥

इन काव्यों के अतिरिक्त गुप्तजी की अन्य कृतियाँ भी बड़ी रोचक हैं। गुप्तजी की भाषा परिमार्जित खड़ी बोली हिन्दी है, जो कठिन न होकर सरल एवं सुबोध हैं। इन्होंने स्थान-स्थान पर लोकोक्तियों एवं मुहावरों का भी प्रयोग किया है, जिससे इनकी काव्यभाषा और सजीव हो गयी है। इन्होंने अपनी कविता-कामिनी को सजाने के लिए उपमा, रूपक आदि भारतीय अलंकारों तथा मानवीकरण आदि पाश्चात्य अलंकारों का भी प्रयोग किया है। इसी प्रकार दोहा, कवित्त आदि छन्दों का भी सफल निरूपण है।

गुप्तजी की शैली की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इन्होंने अपने समय की प्रचलित किसी भी काव्यधारा को अपने क्षेत्र से बाहर नहीं जानें दिया।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम दृढ़तापूर्वक कह सकते हैं कि हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में आधुनिक हिन्दी के कवियों में गुप्तजी का प्रमुख स्थान है। यदि इन्हें आधुनिक युग का राष्ट्रकवि या प्रतिनिधि कवि कहा जाय, तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है।

(३) उर्मिला का विरह-वर्णन

हिन्दी साहित्य के आधुनिक युग के प्रतिनिधि कवि मैथिलीशरण गुप्त ने अपने सुप्रसिद्ध काव्य 'साकेत' में लक्ष्मण-पत्नी उर्मिला के विरह का वर्णन बड़ी ही तन्मयता के साथ किया है। वास्तव में विरह प्रेम का तप्त स्वर्ण है। वेदना की अग्नि में तप कर प्रेम की मलीनता दूर हो जाती है और वह प्रेम विशुद्ध निर्मल बन जाता है। विरह में ही प्रेम निखरता है। उर्मिला का विरह एक अपूर्व घटना है, उसके हृदय में अपने प्रियतम की प्रतिभा है। अतः विरहाग्नि में जलती हुई वह स्वयं आरती बनी हुई है—

'मानस मन्दिर में सती, पति की प्रतिमा थाप।
जलती-सी उस विरह में, बनी आरती आप' ॥

वियोगावस्था में उर्मिला का हृदय सदय हो जाता है, वह वेदना के साथ अपनत्व स्थापित करती है, क्योंकि इसी के कारण प्रियतम का संस्मरण निरन्तर बना हुआ है—

'वेदने ! तू भी भली बनी।
पाई मैंने आज तुझी में अपनी चाह घनी' ॥

धीरे-धीरे निशा का आगमन होता है, दीपक जलता है, उसे देखकर उर्मिला अपनी वियोग-व्यथा प्रिय सखी सुलक्षणा से कहती है—

'दोनों ओर प्रेम पलता है।
सखि ! पतंग तो जलता ही है, दीपक भी जलता है' ॥

शरद ऋतु में खञ्जनों को देखकर उर्मिला के हृदय में प्रियतम लक्ष्मण के नेत्रों का आभास होने लगता है। वह अपनी सखी से कहती है—

'निरख सखी ये खंजन आये।
फेरे उन मेरे रंजन ने नयन इधर ये भाये' ॥

एक दिन वियोगिनी उर्मिला के हृदय में काम के द्वारा क्षोभ उत्पन्न होता है, जिससे वह दीन बनकर उससे प्रार्थना करती है—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

'मुझे फूल मत मारो ।
मैं बाला अबला वियोगिनी, कुछ तो दया विचारो' ।।

कामदेव के न मानने पर वह क्रुद्ध होकर उसे फटकारती हुई कहती है—

'वल हो तो सिन्दूर-विन्दु यह-यह हर नेत्र निहारो ।
रूप दर्प कन्दर्प तुम्हें तो, मेरे पति पर वारो ।।
लो यह मेरी चरणधूलि, उस रति के सिर पर धारो' ।।

परिणाम यह होता है कि उस सती नारी से अपमानित होकर वह काम वहाँ से दूर चला जाता है ।

उर्मिला का विरह उन नायिकाओं का विरह नहीं है जो खाट पर करवटें बदलतीं तथा हाय-हाय करती हैं, बल्कि इसके विरह में स्वाभाविकता है, प्रोषितपतिकाओं के प्रति सहानुभूति है, सृष्टि-सुन्दरी के प्रति आत्मीयता है, सभी के प्रति कल्याण-कामना है ।

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम दृढ़तापूर्वक कह सकते हैं कि उर्मिला का विरह जितना भी कहा जाय, स्वल्प है ।

उर्मिला के विरह-वर्णन में मानवता की पुकार है, गरिमा है, उक्तियों का चमत्कार है । उस रुदन्ती विरहिणी उर्मिला की बड़ी-बड़ी आँखों से अश्रु की जो अजस्र धारा प्रवाहित हुई है, उससे केवल उर्मिला के अञ्चल ही नहीं भीगे हैं, बल्कि साकेत के पृष्ठ भी भीगे हैं, जो कर्ण के लिए सुवर्ण हैं ।

(४) जयशंकर प्रसाद : काव्य-सौन्दर्य तथा साहित्यिक विशेषताएँ

आधुनिक हिन्दी साहित्य के कवियों में जयशंकर प्रसाद का प्रमुख स्थान है । ये हिन्दी जगत् के आधुनिक चेतना के अग्रदूत थे । इसके साथ ही छायावाद तथा रहस्यवाद के प्रवर्तक भी थे । झरना, लहर, आँसू तथा कामायनी—इनके जीवन के विकास के चार सोपान हैं । प्रथम दो कृतियाँ गीतिकाव्य हैं, जो बहुत ही सरस हैं—

'खोलो प्रियतम खोलो द्वार ।
सुप्रभात मेरा भी होवे, इस रजनी का दुख अपार ।
मिट जावे जो तुमको देखूं, खोलो प्रियतम खोलो द्वार' ।।

× × ×

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

'बीती विभावरी जागरी।
अम्बर पनघट में डुबा रही तारा घट उषा नागरी' ।।

'आँसू' के पद्य मुक्तक होने पर भी असम्बद्ध नहीं है। प्रसादजी का यह एक छोटा-सा प्रेमविरह काव्य है। इस काव्य के कुछ सरस पद्य नीचे अंकित हैं—

'इस करुणाकलित हृदय में,
क्यों विकल रागिनी बजती।
क्यों हाहाकार स्वरों में,
वेदना असीम गरजती' ।।

प्रसादजी ने इस काव्य का सृजन फारसी शैली में किया है। यही कारण है कि इन्होंने नायिका के लिए पुल्लिङ्ग शब्द का व्यवहार किया है—

'शशिमुख पर घूंघट डाले,
अञ्चल में दीप छिपाये।
जीवन की गोधूली में,
कौतूहल से तुम आये' ।।

'कामायनी' प्रसादजी की महनीय कृति है। यह स्पष्ट ही एक नारी-प्रधान महाकाव्य है, जिसमें १५ सर्ग हैं। इस काव्य का विषय वेदों में वर्णित प्रलय के उपरान्त मनु की सृष्टि वाला कथानक है। मनु, श्रद्धा तथा इड़ा इसके प्रधान पात्र हैं। आरम्भ में काव्य के नायक मनु श्रद्धा के रूप-लावण्य पर विमुग्ध होकर उसे अपनी जीवनसंगिनी बनाते हैं, परन्तु कुछ समय पश्चात् ईर्ष्यावश उसे छोड़कर सारस्वत देश चले जाते हैं, जहाँ इड़ा के रूप पर विमोहित होकर प्रणय-निवेदन करते हैं, परन्तु सफल नहीं होते। अन्त में श्रद्धा ही उन्हें आनन्दलोक का दर्शन कराकर उनके अशान्त जीवन को सरस बनाती है। कामायनी का पर्यवसान आनन्द है। इसकी प्राप्ति ही काव्य का अन्तिम लक्ष्य है। इस काव्य का एक रूपक पक्ष भी है। मनु से मनुष्य (मन) श्रद्धा से विश्वासमयी रागात्मक वृत्ति तथा इड़ा से तर्क-वितर्क प्रधान बुद्धि का आश्रय लेने से कवि का रूपक स्पष्ट हो जाता है। यहां कामायनी के कुछ सरस पद्य उपस्थित किये जा रहे हैं, जिनमें श्रद्धा के रूप-सौन्दर्य का आलंकारिक वर्णन है—

'नील परिधान बीच सुकुमार,
खुल रहा मृदुल अधखुला अंग।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खिला हो ज्यों बिजली का फूल,
मेघ वन बीच गुलाबी रंग ।।
घिर रहे थे घुघराले बाल,
अंस अवलम्बित मुख के पास ।
नील घन शावक से सुकुमार,
सुधा भरने को विधु के पास' ।।

इस काव्य में श्रद्धा-लज्जा का संवाद भी अपने ढंग का निराला है । श्रद्धा लज्जा से पूछती है—

'नीरव निशीथ में लतिका-सी,
तुम कौन आ रही हो बढ़ती ।
कोमल बाहें फैलाये-सी,
आलिंगन का जादू पढ़ती' ।।

लज्जा उत्तर देती है—

इतना न चमत्कृत हो बाले,
अपने मन का उपकार करो ।
मैं एक पकड़ हूँ जो कहती—
ठहरो कछु सोच-विचार करो' ।।

यहाँ मानवीकरण तथा छायावाद की अच्छी झलक है ।

वास्तव में कामायनी प्रसादजी की काव्यपूर्णता का अन्तिम चित्र है । इसमें मानवता के विकास की चरम सीमा निहित है । भक्तिकाल के काव्यों में रामचरितमानस का जो स्थान है, वही स्थान आधुनिक काल के काव्यों में कामायनी का है ।

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम दृढ़तापूर्वक कह सकते हैं कि काव्य-सौन्दर्य एवं काव्य-सज्जा की दृष्टि से जयशंकर प्रसाद आधुनिक हिन्दी काव्य-जगत् में अद्वितीय कलाकार हैं ।

(५) श्रद्धा का काव्य-सौन्दर्य

आधुनिक हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध कवि श्रीजयशंकर प्रसाद द्वारा लिखित 'कामायनी' महाकाव्य के भीतर मनु नायक तथा श्रद्धा नायिका है, कामगोत्रोत्पन्ना होने के कारण इसे कामायनी भी कहते हैं । जलप्लावन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

समाप्ति के अनन्तर मनु तपस्या के लिए एक स्थान पर आसीन है, वहीं सर्वप्रथम उनके निकट श्रद्धा का आगमन होता है। वह उन्हें शान्तचित्त एकान्त में बैठे हुए देखकर प्रश्न करती है—

'कौन तुम संसृति जलनिधि तीर,
तरंगों से फेंकी मणि एक?
कर रहे निर्जन का चुपचाप,
भरा की धारा से अभिषेक' ॥

मनु के कर्णकुहर में जब यह मधुर वाणी प्रवेश करती है, तब वे उसकी ओर दृष्टिपात करते हैं। श्रद्धा का रूप-लावण्य ऐसा सुन्दर है, जिसे देखकर उनके हृदय में कौतूहल उत्पन्न होता है—

'नील परिधान वीच सुकुमार,
खुल रहा मृदुल अधखुला अंग।
खिला हो ज्यों विजली का फूल,
मेघ वन वीच गुलावी रंग॥
घिर रहे थे घुघराले वाल,
अंस अवलम्वित मुख के पास।
नील घन शावक-से सुकुमार,
सुधा भरने को विधु के पास' ॥

सुन्दरी श्रद्धा के वचनों को सुनकर मनु कहते हैं कि इस पृथ्वी पर मेरा जीवन अत्यंन्त अस्त-व्यस्त और नीरस है, परन्तु इस पतझड़ सदृश जीवन में कोकिल के समान सुमन को वसन्त का सन्देश देने वाली तुम कौन हो?

'कौन हो तुम वसन्त के दूत,
विरस पतझड़ में अति सुकुमार?'

मनु की बातों को सुनकर आगन्तुक श्रद्धा कहती है—

'भरा था मन में नव उत्साह,
सीख लूं ललित कला का गान।
इधर रह गन्धर्वों के देश,
पिता की हूँ प्यारी सन्तान' ॥

एक दिन हिमालय की प्राकृतिक सुषमा देखने लगी, मन आह्लाद से भर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गया, उसी समय जलधि की उत्तुंग तरंगें हिमशृंगों से टकराने लगी, जल-प्लावन हो गया। जब वह शान्त हुआ तब निरुपाय होकर मैं इधर-उधर भटकने लगी। मैंने अनुमान किया कि इस धरातल पर कोई प्राणी अवश्य जीवित होगा, परन्तु हे तपस्वी ! तुम इतने क्लान्त क्यों हो ? अज्ञात दुःखों से क्यों भयभीत हो रहे हो ? तुम काम करो, काम कल्याण-मण्डित है। अतः तुम इससे विमुख न हो। नीले परदे के बीच सुख छिपा है। दुःख के बाद सुख अवश्य ही आता है। यह दुःख अभिशाप नहीं है, बल्कि ईश्वर का वरदान है—

'दुख की पिछली रजनी बीच,
विकसता सुख का नवल प्रभात'।

× × ×

'जिसे तुम समझे हो अभिशाप,
जगत् की ज्वालाओं का मूल।
ईश का वह रहस्य वरदान,
कभी मत जाओ इसको भूल'॥

प्रकृति में परिवर्तन आवश्यक है। वह पुरातनता छोड़कर नवीनता धारण करती है। बासी फूलों से प्रकृति का शृंगार कभी नहीं होता, विकसित कुसुम ही उसके सौन्दर्य हैं। यह प्रकृति आनन्दपूर्ण है। कर्म से भोग और भोग से कर्म का आनंन्द है। हे तपस्वी ! तपस्या ही जीवन में सत्य नहीं है, इससे तुम आत्मविस्तार नहीं कर सकते, यह अकेले कदापि सम्भव नहीं। मैं चाहती हूँ कि तुम्हें आत्मसमर्पण करके तुम्हारी सहचरी बन जाऊँ, मेरा हृदयरत्न तुम्हारे लिए प्रस्फुटित है। तुम संसृति के मूल रहस्य बनो, जिससे संसार का विस्तार हो, यह समस्त विश्व सौरभ से परिपूर्ण हो जाय। विधाता का मंगल वरदान श्रवण करो, जिसका जयनाद विश्व में गूँज रहा है—

'शक्तिशाली हो विजयी बनो,
विश्व में गूँज रहा वरदान'।

इस पृथ्वी पर सर्वत्र कीर्ति प्रसरित हो और मानवता विजयिनी हो जाय—

'विजयिनी मानवता हो जाय'।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कवि ने श्रद्धा के बाह्य सौन्दर्य के साथ-साथ उसके आन्तरिक सौन्दर्य का भी चित्रण करके इस वर्णन में मणि-काञ्चन संयोग कर दिया है। श्रद्धा का हृदय केवल मनु के लिए ही नहीं, बल्कि समस्त जगत् के लिए भी उदार है। इसकी कोमल वाणी में अखण्ड विश्वास तथा जागरण का सन्देश भरा हुआ है।

(६) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' : काव्य-सौन्दर्य तथा साहित्यिक विशेषताएँ

आधुनिक युग के हिन्दी साहित्य के कवियों में सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का प्रमुख स्थान है। ये आधुनिक चेतना के सर्वाधिक और सर्वसमर्थ अभिव्यक्ति करने वाले विद्रोहशील एवं क्रान्तिकारी कवि हैं।

कृतियाँ—इनकी निम्नांकित कृतियाँ प्रसिद्ध हैं—

परिमल, गीतिका, अनामिका तथा अपरा इत्यादि।

निरालाजी सौन्दर्योपासक कवि हैं। अतः सौन्दर्य-चित्रण में इन्हें अनुपम सफलता मिली है। इनकी कविताएँ छन्दों के बन्धनों से मुक्त हैं, क्योंकि इन्हें बन्धन प्रिय नहीं। इनकी कविताओं में प्रायः संगीत तत्त्व विद्यमान है, जिससे भाषा में सजीवता तथा कोमलता आ गयी है। यथा सरस्वती-वन्दना—

'वरदे, वीणावादिनी वर दे।
प्रिय स्वतंत्र रव, अमृत मंत्र नव भारत में भर दे' ॥

इसी प्रकार 'वसन्त' नामक कविता का भी संगीत दर्शनीय है—

'सखि ! वसन्त आया।
भरा हर्ष वन के मन नवोत्कर्ष छाया' ॥

इन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से देशवासियों को जागरण का सन्देश दिया है—

'जागो फिर एक बार।
पशु नहीं, वीर तुम, समरशूर क्रूर नहीं' ॥

इनके द्वारा रचित 'राम की शक्तिपूजा' तथा 'तुलसीदास' दोनों वृहद कविताएँ हैं, जिनमें भाषा, भाव तथा कला का सुन्दर चमत्कार है। पुरुषोत्तम राम शक्ति की उपासना करके लंकेश रावण पर विजय प्राप्त करते हैं और

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गोस्वामी तुलसीदास अपनी पत्नी रत्नावली में दैवी शक्ति देखकर कर्मपथ में प्रवृत्त होते हैं।

निरालाजी ने अपने युग के अनुसार प्रचलित वादों का भी वर्णन किया है। इनका रहस्यवाद बड़ा ही मनोरम है—

'कौन तम के पार रे कह ?'

इसी प्रकार 'तुम और मैं' नामक कविता में भी रहस्यवाद की अच्छी झलक है—

'तुम तुंग हिमालय शृंग और मैं चंचल गति सुरसरिता'।

छायावाद का वर्णन भी कवि ने किया है। सन्ध्या-सुन्दरी का एक चित्र देखिए—

'दिवसावसान का समय,
मेघमय आसमान से उतर रही है।
वह सन्ध्या सुन्दरी परी-सी,
धीरे धीरे धीरे'॥

निरालाजी ने प्रगतिवादी कविताएँ भी लिखी हैं। यथा—मजदूरिनी का चित्र—

'वह तोड़ती पत्थर।
देखा मैंने इलाहाबाद के पथ पर'॥

'भिखारी' नामक कविता में भी प्रगतिवाद की अच्छी झलक है—

'वह आता।
दो टूक कलेजे करता, पछताता पथ पर आता'॥

इसी प्रकार 'विधवा' नामक कविता में असहाय विधवा का भी एक चित्र देखिए—

'वह इष्टदेव के मन्दिर की पूजा-सी।
वह दीपशिखा-सी शान्त भाव में लीन।
दलित भारत की ही विधवा है'॥

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम दृढ़तापूर्वक कह सकते हैं कि कवि निराला की कविताओं में कल्पना, भावुकता, सरलता तथा मधुरता का अद्भुत मिश्रण है। इसके साथ ही भाषा सरल, सुकोमल, ओजपूर्ण,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रवाहमयी, प्रतीकात्मक तथा लाक्षणिकता से युक्त है। इन्होंने अपनी प्रतिभा के कारण हिन्दी की समस्त प्रवृत्तियों को अपनी कविताओं में पल्लवित एवं पुष्पित किया है। इसके साथ ही कविता के क्षेत्र में नवीन पद्धति को जन्म देकर अपनी क्रान्ति के स्वर को मुखरित किया है। अतः ये हिन्दी साहित्य में क्रान्तिकारी कलाकार के रूप में प्रतिष्ठित हैं।

(७) 'राम की शक्तिपूजा' का काव्य-सौन्दर्य

श्रीसूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' द्वारा विरचित 'राम की शक्तिपूजा' बंगला भाषा में लिखित 'कृत्तिवास' रामायण तथा संस्कृत भाषा में लिखित 'देवी भागवत' के आधार पर अंकित है। इसके भीतर कवि ने उस समय का चित्रण किया है, जिस समय लंका के रणक्षेत्र में राम-रावण युद्ध के प्रथम दिन अमोघ अस्त्रों के प्रयोग करने पर भी मर्यादापुरुषोत्तम राम लंकाधिपति रावण को पराजित करने में सफल न हो सके। इस दिन के युद्ध में जय-पराजय का कोई निर्णय न हो सका—

'रवि हुआ अस्त ज्योति के पत्र में लिखा अमर।
रह गया राम-रावण का अपराजेय समर'॥

युद्ध के विराम होने पर जब राम खिन्नावस्था में सुबेल पर्वत पर पहुँचे, तब इन्हें खिन्न देखकर मन्त्रिवर विभीषण ने कहा—'भगवन्! आपका वदनाब्ज मलिन क्यों है?'

विभीषण के वचनों को सुनकर राम ने कहा—'आज के प्रथम युद्ध में मेरे अमोघ अस्त्र व्यर्थ हो गये। मैंने देखा कि महाशक्ति लंकेश रावण को अपने अंक में लेकर उसकी सहायता कर रही है, क्योंकि उसने आराधना के द्वारा उन्हें अपने अनुकूल कर लिया है'।

राम के वचनों को सुनकर मुख्यमंत्री भल्लपति जाम्बवान् ने कहा—'भगवन्! जब अधर्मरत रावण साधना से महाशक्ति को प्रसन्न कर सकता है, तो आप धर्मरत भगवान् है, दृढ़ आराधना से उन्हें प्रसन्न करके अनायास ही लंकाधिपति पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। जब तक आप शक्ति की आराधना में लीन रहेंगे, तब तक युद्ध का भार प्रमुख सेनापतियों पर रहेगा और वीर शिरोमणि लक्ष्मणजी सेनानायक रहेंगे'। शक्ति की आराधना का संकल्प मन में आते ही राम का कमलमुख प्रफुल्लित हो गया और वे क्षण

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मात्र के लिए महिषासुरमर्दिनी परम ज्योतिर्मयी भगवती महाशक्ति के ध्यान में निमग्न हो गये—

'मातः दशभुजा विश्वज्योति मैं हूँ आश्रित'।

तदनन्तर राम ने पवनसुत हनुमान् से कहा कि हे मारुति ! शक्ति की आराधना के लिए मुझे देवीदह सरोवर के एक सौ आठ नीलकमल चाहिए—

'चाहिए एक सौ आठ, कपि इन्दीवर।
कम से कम, अधिक और हों अधिक और सुन्दर ।।
जाओ देवीदह, उषाकाल होते सत्वर।
तोड़ो, लाओ, वे कमल, लौटकर लड़ो समर' ।।

मारुतनन्दन हनुमान् भल्लपति जाम्बवान् से सरोवर का मार्ग अवगत कर एक सौ आठ इन्दीवर ले आये और भगवान् राम शारदीय नवरात्र में महाशक्ति भगवती दुर्गा की आराधना में लीन हो गये।

जब आराधना करते हुए अष्ट दिन व्यतीत हो गये, तब नवम दिन भगवती आदिशक्ति ने राम की परीक्षा हेतु एक नीलकमल चुरा लिया। जब मर्यादापुरुषोत्तम राम ने पूर्णाहुति हेतु अन्तिम कमलपुष्प ग्रहण करने के लिए हाथ बढ़ाया तब इन्दीवर हस्तगत नहीं हुआ, जिससे असफलता का अनुभव करते हुए राम का मन पुनः चिन्तित हो गया, वे अपने को धिक्कारने लगे—

'धिक् जीवन को जो पाता ही आया विरोध।
धिक् साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध' ।।

कुछ ही क्षण बाद उन्हें स्मरण हुआ कि मेरी माता कौसल्या बाल्यावस्था में मुझे कमलनयन कहकर पुकारती थी, अभी मेरे निकट दो नेत्रकमल शेष हैं। मैं उन्हीं में से एक महादेवी के चरणों में अर्पित करके अपनी आराधना की पूर्णाहुति करूँगा—

'कहती थी माता मुझे सदा राजीवनयन।
दो नीलकमल हैं शेप अभी यह पुरश्चरण।
पूजा करता हूँ देकर मातः, एक नयन' ।।

ज्यों ही भगवान् राम ने दायें हाथ से कमलनयन को बेधने के लिए बायें हाथ में तेज शर ग्रहण किया, ब्रह्माण्ड कांपने लगा, जिससे शीघ्र ही

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

महाशक्ति भगवती दुर्गा ने प्रकट होकर उनका हाथ पकड़ लिया। जब मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने अपनी परमाराध्या ज्योतिर्मयी जगदम्बिका को अपने समक्ष देखा, तब वे उनके पादपद्मों में श्रद्धावनत होकर स्तुति करने लगे, जिससे प्रसन्न होकर महाशक्ति ने उन्हें लंकाधिपति रावण पर विजय का आशीर्वाद देती हुई उनके मुखारविन्द में समा गयीं—

'जय होगी, जय होगी, हे पुरुषोत्तम नवीन।
कह महाशक्ति राम के बदन में हुई लीन' ॥

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम दृढ़तापूर्वक कह सकते हैं कि राम की शक्तिपूजा का वैशिष्ट्य कथा के कारण तो है ही, भाव तथा कला के कारण भी है। इसके साथ ही इसमें जीवन-सन्देश तथा आशावाद की सुन्दर झलक भी निहित है।

(८) सुमित्रानन्दन पन्त : काव्य-सौन्दर्य तथा साहित्यिक विशेषताएँ

आधुनिक युग के प्रसिद्ध कवियों में सुमित्रानन्दन पन्त का विशिष्ट स्थान है। ये मूलतः प्रकृति के कवि हैं। इनका प्रकृतिचित्रण बहुत ही मधुर एवं मनोहर है। प्रकृति को इन्होंने नारी का रूप दिया है, जिससे इनकी कविताओं में छायावाद की झलक है। इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नांकित हैं—

कृतियाँ—पल्लव, पल्लविनी, वीणा, ग्रन्थि, गुञ्जन, युगान्त, युगवाणी, ग्राम्या, स्वर्णकिरण, स्वर्णधूलि तथा मधुज्वाल इत्यादि।

पन्तजी सुन्दरं के कवि हैं। यद्यपि यह सुन्दरं सत्यं-शिवं से शून्य नहीं है। सुमन-चयन की प्रवृत्ति इनमें प्रारम्भ से ही है, सौन्दर्य ही इनकी कविता का विषय है। यही कारण है कि प्रकृति के सुकुमार कवि होते हुए भी प्रकृति के विराट् रंगमंच पर ये सौन्दर्य-चित्रण करते हुए दृष्टिगत होते हैं। इनका भावपक्ष कलापक्ष की अपेक्षा विशेष मनोहर तथा आकर्षक है।

वीणा इनकी प्रथम रचना है, यद्यपि इसका प्रकाशन पल्लव-पल्लविनी के बाद हुआ, फिर भी इसकी कमनीयता कम नहीं है—

'प्रथम रश्मि का आना रंगिणि
तूने कैसे पहचाना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कहाँ-कहाँ हे वालविहंगिनि
तूने पाया यह गाना' ॥

प्रकृति-सुन्दरी के प्रति इनका इतना अधिक प्रेम है कि वे बाला-प्रेम को भी ठुकरा देते हैं—

'छोड़ द्रुमों की मृदु छाया ।
तोड़ प्रकृति से भी माया' ॥
वाले ! तेरे वालजाल में,
कैसे उलझा दूं लोचन' ॥

पन्तजी के कलापक्ष में भी सौन्दर्य है। इन्होंने कविता-कामिनी को सजाने के लिए उपमा तथा रूपक आदि भारतीय अलंकारों तथा विशेषण-विपर्यय आदि पाश्चात्य अलंकारों के साथ चित्रभाषा, चित्रोपमता तथा ध्वनिचित्रण की ओर भी ध्यान दिया है। इनके ऊपर संस्कृत-कवि कालिदास तथा अंग्रेजी कवि कीट्स की छाप स्पष्ट परिलक्षित होती है। ये कवीन्द्र रवीन्द्र के दर्शन से भी प्रभावित है। इनकी 'नौका-विहार' नामक कविता में प्रकृतिचित्रण के साथ-साथ रूपक अलंकार, मानवीकरण, छायावाद तथा चित्रोपमता की झलक देखिए—

'सैकत शय्या पर दुग्ध धवल
तन्वंगी गंगा ग्रीष्म विरल
लेटी है शान्त क्लान्त निश्चल !
तापस बाला गंगा निर्मल
शशिमुख से दीपित मृदु करतल
लहरें उर पर कोमल कुन्तल' !

इसी प्रकार 'सन्ध्या-सुन्दरी' कविता में भी मानवीकरण तथा छायावाद का चमत्कार देखिए—

'कौन तुम रूपसि कौन ?
व्योम से उतर रही चुपचाप' ।

इन्होंने विशेषण-विपर्यय का भी वर्णन किया है—

'मूक व्यथा का मुखर भुलख' ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पन्तजी का लाक्षणिक प्रयोग भी द्रष्टव्य है—

'धूल की ढेरी में अनजान।
छिपे हैं मेरे मधुमय गान'॥

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम दृढ़तापूर्वक कह सकते हैं कि पन्तजी आधुनिक युग में कविता के क्षेत्र में अद्वितीय हैं। इनकी सफलता का एक मात्र कारण है—कल्पनाशक्ति, जिसके कारण इनकी कृतियाँ विश्व के लिए विभूति हैं। ये काव्य-सौन्दर्य तथा प्रकृतिचित्रण में अप्रतिम हैं। इन्होंने कविताकामिनी को सुसज्जित करने के लिए नवीन भाषा, नवीन रूपरेखा तथा नवीन कला प्रदान की है, जिससे उसमें प्रौढ़ता आ गयी है। इन्होंने जिस नवीन मार्ग को अपनाया, वह बहुत ही स्वाभाविक, यथार्थ और प्रशस्त है। अपनी कृतियों के सौन्दर्य के कारण पन्तजी सदैव चिर स्मरणीय रहेंगे।

(९) महादेवी वर्मा : काव्य-सौन्दर्य तथा साहित्यिक विशेषताएँ

आधुनिक युग के सुप्रसिद्ध कवियों में कवयित्री महादेवी वर्मा का प्रमुख स्थान है। यह इसलिए नहीं कि वे स्त्री हैं, बल्कि इसलिए कि इन्होंने आधुनिक काव्यकला के शृंगार में जितना योग दिया है उतना किसी भी आधुनिक कलाकार ने नहीं।

इनके द्वारा लिखित निम्नांकित रचनाएँ बहुत ही प्रसिद्ध हैं।

कृतियाँ—नीहार, रश्मि, नीरजा, दीपशिखा तथा सान्ध्य गीत।

इनकी कृतियों की भाषा सुकोमल, मधुर, प्राञ्जल तथा सौष्ठवपूर्ण है एवं इनकी शैली में गीत की प्रधानता है।

प्रसाद, निराला तथा पन्त—तीनों कवियों ने वाह्यपरक रचनाएँ की हैं, महादेवी वर्मा ने आत्मपरक रचनाओं की ही सृष्टि की है। ये मीरा के समान ही प्रियतम के मधुर भाव की उपासिका है, परन्तु दोनों के प्रियतम में अन्तर है। मीरा के उपास्य प्रिय मन्दिरों में निवास करते हैं। अतः वे उनके समक्ष नाच-गाकर उन्हें प्रसन्न करती हैं, परन्तु महादेवी के उपास्य प्रिय हृदय-मन्दिर के निवासी हैं, जो मानसिक पूजा से ही सन्तुष्ट किये जा सकते हैं। इनके मत से वाह्य पूजा आडम्बर है। वे कहती हैं—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

'क्या पूजा क्या अर्चन रे'।

इनका मन संयोग की अपेक्षा वियोग में ही अधिक रमा है—

'काटूं वियोग पल रोते, संयोग समय छिप जाऊँ'।

विरह में जो सुख है, आनन्द है, वह संयोग में कहाँ ? क्योंकि वियोग में प्रियतम की याद सदैव बनी रहती है। विरहजनित दुःख या पीड़ा विरही या विरहिणी के लिए अमृत पाथेय है। अतः ये उसे सम्भालकर रखना चाहती हैं। इनका कथन है कि 'दुःख मेरे निकट जीवन का ऐसा काव्य है, जो सारे संसार को एक सूत्र में बाँध लेने की क्षमता रखता है'।

अतः महादेवी वर्मा का विरह से स्वाभाविक प्रेम है—

'तुमको पीड़ा में ढूंढ़ा।
तुममें ढूढूंगी पीड़ा'॥

यह पीड़ा इनके मन में भीगे वस्त्र के समान लिपटी हुई है—

'पीड़ा मेरे मानस में भीगे पट-सी लिपटी है'।

इन्हें अपने अमर सुहाग पर दृढ़ विश्वास है—

'सखि ! मैं हूँ अमर सुहाग भरी'।

अखण्ड प्रियतम के लिए अखण्ड सुहागिनी होना स्वाभाविक ही है—

'दूर प्रिय से हूँ, अखण्ड सुहागिनी भी हूँ'।

ये मन्दिर के दीप को शाश्वत प्रज्ज्वलित चाहती हैं—

'यह मन्दिर का दीप इसे नीरव जलने दो'।

इनकी कविताओं में प्रकृति सम्बन्धी रहस्यवाद का विशेष वर्णन है—

'तोड़ दो इस क्षितिज को, मैं देख लूं उस ओर क्या है ?'

प्रभात-वर्णन में भी रहस्यवाद की झलक देखिए—

'चुभते ही तेरा अरुण बान'।

महादेवी वर्मा जब प्रकृति में चेतनता प्रदान करके मानवीकरण करती है तब कविताएँ छायावाद का रूप धारण कर लेती हैं। वर्षा ऋतु में मानवीकरण देखिए—

'रूपसि तेरा घन केशपास।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्यामल-श्यामल कोमल-कोमल,
लहराता सुरभित केशपास' ॥

इसी प्रकार रजनी का एक चित्र देखिए—

'पुलकती आ वसन्त रजनी'।

× × ×

'रजनी ओढ़े जाती थी,
झिलमिल तारों की जाली।
उसके बिखरे वैभव पर,
जब रोती थी उजियाली' ॥

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम दृढ़तापूर्वक कह सकते कि श्रीमती महादेवी वर्मा की वाणी गीतकाव्य के रूप में प्रस्फुटित है, र रहस्यवाद तथा छायावाद के मर्मस्पर्शी भावनाओं, नवनीत सदृश कोम कल्पनाओं तथा कसक भरे शब्दों से ओत-प्रोत है। इन्होंने अपनी कृतियों हिन्दी साहित्य की जो सेवा की है, उसके लिए ये साहित्य-जगत् में चि स्मरणीय बनी रहेंगी।

(१०) सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' : काव्य-सौन्दर्य तथा साहित्यिक विशेषताएँ

वर्तमान हिन्दी साहित्य के कवियों में अज्ञेयजी का प्रधान स्थान है जिस समय इन्होंने साहित्य के क्षेत्र में प्रवेश किया, उस समय प्रगतिवाद कविताएँ चरम सीमा पर पहुँच चुकी थीं। अज्ञेयजी ने प्रयोगवादी कविता को जन्म दिया। इस सम्बन्ध में इनका कथन है कि 'प्रयोग सभी कालों कवियों ने किये हैं। यद्यपि किसी एक काल में किसी विशेष दिशा में प्रयो करने की प्रवृत्ति स्वाभाविक है, किन्तु कवि क्रमशः अनुभव करता आया कि जिन क्षेत्रों में प्रयोग हुए हैं, उनसे आगे बढ़कर उन क्षेत्रों में प्रयोग कर चाहिए, जिन्हें अभी छूआ नहीं गया है'।

अज्ञेयजी ने अनेक प्रयोगवादी कविताएँ लिखकर अपने समकालीन अने कवियों को भी कविताएँ लिखने के लिए प्रेरित किया। इनके द्वारा सम्पादि 'तारसप्तक' तीन भागों में प्रकाशित है, जिनमें अपनी तथा समकालीन सा सात कवियों की प्रयोगवादी कविताओं का संकलन है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इसके अतिरिक्त इनकी रचनाएँ निम्नांकित हैं—

कृतियाँ—आँगन के पार, हरी घास पर क्षण भर, इन्द्रधनु, कितनी नावों में कितनी बार, बावरा अहेरी, पहले मैं सन्नाटा सुनता हूँ इत्यादि।

यहाँ अज्ञेय द्वारा रचित 'यह दीप अकेला' नामक प्रयोगवादी कविता की कुछ पंक्तियाँ उपस्थित की जा रही हैं, जिससे इनकी भाषा-शैली पर प्रकाश पड़ता है—

'यह दीप अकेला स्नेह भरा।
है गर्व भरा मदमाता, पर
इसको भी पंक्ति दे दो'॥

इसी प्रकार 'नदी के द्वीप' की भी कुछ पंक्तियाँ देखिए—

'हम नदी के द्वीप हैं!
हम नहीं कहते कि हमको छोड़कर,
स्रोतस्विनी बह जाय।
वह हमें आकार देती है'॥

अज्ञेयजी की भाषा-शैली में नवीनता है, मुक्त छन्दों का प्रयोग है।

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम दृढ़तापूर्वक कह सकते हैं कि अज्ञेयजी आधुनिक युग के वर्तमान कवियों में प्रयोगवादी कविताओं के प्रवर्तक समर्थ कवि के रूप में प्रतिष्ठित हैं।

आधुनिक हिन्दी साहित्य में वाद

(१) रहस्यवाद

आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रचलित वादों में रहस्यवाद का महत्त्वपूर्ण स्थान है। जब कवि अपनी कविताओं में उस चिरन्तन शक्ति का रहस्यमय विवेचन करता है अथवा प्रकृति के किसी रहस्य का उद्घाटन करना चाहता है, तब उस समय की कविताएँ रहस्यवाद के नाम से अभिहित होती हैं। आधुनिक युग में रहस्यवाद का दर्शन सर्वप्रथम मैथिलीशरण गुप्त की कविताओं में होता है—

'अच्छी आँख मिचौनी खेली।
बार-बार तुम छिपो और मैं खोजूं तुम्हें अकेली'॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तदनन्तर इसका दर्शन जयशंकर प्रसाद की 'झरना' की कविताओं में मिलता है—

'खोलो प्रियतम, खोलो द्वार।
सुप्रभात मेरा भी होवे, इस रजनी का दुख अपार।
मिट जावे जो तुमको देखूं खोलो प्रियतम खोलो द्वार' ॥

कवि के 'लहर' नामक काव्य की पंक्तियाँ भी दर्शनीय हैं—

'ले चल मुझे भुलावा देकर मेरे नाविक धीरे-धीरे'।

प्रसादजी के बाद इस परम्परा को आगे बढ़ाने वाले कवियों में सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का नाम प्रसिद्ध है। इनकी कविताओं में रहस्यवाद की अच्छी झलक है—

'कौन तम के पार रे कह ?'

× × ×

'तुम तुंग हिमालय शृंग और मैं चंचल गति सुरसरिता'।

वर्तमान युग में रहस्यवाद पर सर्वाधिक कविता लिखने वाले कवियों में कवयित्री महादेवी वर्मा हैं। अपने प्रियतम के अमरत्व में इन्हें पूर्ण विश्वास है—

'सखि ! मैं हूं अमर सुहाग भरी'।

पति का आगमन नीरव निशीथ में होता है—

'मेरा पति निशीथ नीरवता में आता चुपचाप'।

प्रियतम का मिलन तो होता है, पर वह मूक मिलन है—

'कैसे कहती हो सपना है अलि, उस मूक मिलन की बातें'।

यद्यपि प्रियतम दूर रहते हैं, पर उससे क्या ? अखण्ड सुहागिनी में तो कोई सन्देह नहीं है—

'दूर प्रिय से हूं अखण्ड सुहागिनी भी हूं'।

प्रियतम के सो जाने पर गाने का आयोजन करती हैं—

'तुम सो जाओ मैं गाऊँ'।

महादेवी की कविताओं में प्रकृति सम्बन्धी रहस्यवाद की भी न्यूनता नहीं है—

'तोड़ दो इस क्षितिज को मैं देख लूं उस ओर क्या है ?'

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रभात-वर्णन में भी रहस्यवाद की झलक देखिए––

'चुभते ही तेरा अरुण बान'।

इस प्रकार आधुनिक हिन्दी साहित्य में रहस्यवाद पल्लवित एवं पुष्पित होता रहा।

(२) छायावाद

आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रचलित वादों में छायावाद का महत्त्वपूर्ण स्थान है। जब कवि अपनी कविताओं के प्रकृति-चित्रण में मानवीकरण करता है, तब उस समय की कविताएँ छायावाद के नाम से अभिहित होती हैं। आधुनिक युग में छायावाद का दर्शन सर्वप्रथम जयशंकर प्रसाद की कविताओं में होता है। इन्होंने लहर, आँसू और कामायनी के भीतर छायावाद का अच्छा चित्रण किया है। 'लहर' की एक कविता देखिए, जिसमें छायावाद की अच्छी झलक है––

'अम्बर पनघट में डुबो रही ताराघट ऊषा नागरी'।

'आँसू' नामक काव्य की पंक्तियाँ भी देखिए—

'मधु राका मुस्काती थी, पहले देखा जब तुमको'।

'कामायनी' के भीतर छायावाद की अच्छी झलक है––

'नीरव निशीथ में लतिका-सी
तुम कौन आ रही हो बढ़ती ?
कोमल बाहें फैलायी-सी
आलिंगन की जादू पढ़ती'॥

प्रसादजी के बाद इस परम्परा को बढ़ाने वाले कवियों में सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का नाम बड़े ही आदर के साथ लिया जाता है। इनकी 'जूही की कली' नामक कविता की कुछ पंक्तियाँ देखिए––

'विजन वन वल्लरी पर
सोती थी सुहाग भरी-
स्नेह स्वप्न-मग्न अमल कोमल तनु तरुणी
जूही की कली'।

'सन्ध्या-सुन्दरी' नामक कविता का मानवीकरण भी दर्शनीय है—

'दिवसावसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वह सन्ध्या-सुन्दरी परी-सी
धीरे-धीरे-धीरे' ॥

निराला के पश्चात् इस परम्परा को आगे बढ़ाने वाले कवि सुमित्रानन्दन पन्त हैं। इन्होंने प्रकृतिसुन्दरी में मानवीकरण करके छायावाद सम्बन्धी अनेक कविताएँ लिखी हैं। यहाँ इनके द्वारा लिखित 'नौका-विहार' नामक कविता की पंक्तियाँ उपस्थित की जा रही हैं—

सैकत शय्या पर दुग्ध धवल,
तन्वङ्गी गंगा ग्रीष्म विरल,
लेटी है शान्त क्लान्त निश्चल'।

इसी प्रकार 'छाया' वर्णन में मानवीकरण दर्शनीय है—

'हाँ, सखि आओ बाँह खोल कर,
मिलकर गले जुड़ा लें प्रान।
फिर तुम तन में मैं प्रियतम में,
हो जावें द्रुत अन्तर्ध्यान' ॥

इसके पश्चात् इस परम्परा की श्रीवृद्धि करने वाली कवयित्री महादेवी वर्मा है। इनके वर्षा ऋतु-वर्णन में छायावाद की झलक देखिए—

'रूपसि, तेरा घन केशपास।
श्यामल श्यामल कोमल कोमल,
लहराता सुरभित केशपास' ॥

इसी प्रकार रजनी के मानवीकरण में छायावाद का एक चित्र देखिए—

'पुलकती आ वसन्त रजनी'।
× × ×
'रजनी ओढ़े जाती थी,
झिलमिल तारों की जाली।
उसके बिखरे वैभव पर,
जब रोती थी उजियाली' ॥

प्रकृति की अन्य कविताओं में भी छायावाद दर्शनीय है—

'निशा को धो देता राकेश,
चाँदनी में जब अलकें खोल।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कली से कहता तब मधुमास,
बता दे मधु-मदिरा का मोल' ॥

प्रकृति के पुष्प और आकाश के तारों में मानवीकरण के कारण छायावाद की झलक है—

'वे मुस्काते फूल, नहीं—
जिनको आता है मुरझाना।
वे तारों के दीप, नहीं—
जिनको आता है बुझ जाना' ॥

इस प्रकार आधुनिक हिन्दी साहित्य में छायावाद पल्लवित एवं पुष्पित होता रहा।

(३) प्रगतिवाद

आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रचलित वादों में प्रगतिवाद का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह वाद छायावाद के पश्चात् प्रारम्भ हुआ। अतः स्पष्ट है कि छायावाद की नींव पर प्रगतिवाद की अट्टालिका निर्मित हुई। इस सम्बन्ध में प्रोफ़ेसर देवराज का कथन है कि 'जब छायावाद का स्वप्निल लोक कवि को आत्मतुष्टि न दे सका, तब वह इसी जगत् के सम-विषम धरातल पर उतर आया और जन-जीवन की विषमताओं एवं समाज के उपेक्षित व्यक्तियों को अपना विषय बनाकर वह प्रगति के गीत गा उठा'।

प्रगतिवादी कवियों में सर्वप्रथम सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' तथा सुमित्रा-नन्दन पन्त का नाम बड़े आदर के साथ स्मरण किया जाता है।

क्रान्तिकारी कवि 'निराला' द्वारा लिखित प्रगतिवाद सम्बन्धी कविताओं में ग्रीष्मकालीन मध्याह्न वेला में एक तरुण मजदूरिनी के पत्थर तोड़ने का एक दृश्य देखिए—

'वह तोड़ती पत्थर।
देखा मैंने इलाहाबाद के पथ पर।
श्याम तन, भर बँधा यौवन,
नत नयन प्रिय-कर्म रत मन,
गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार प्रहार' ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इसी प्रकार 'भिखारी' नामक कविता में भी प्रगतिवाद का मार्मिक चित्र है—

'वह आता ।
दो टूक कलेजे करता, पछताता पथ पर आता ।।
मुट्ठी भर दाने को—भूख मिटाने को ।
मुँह फटी-पुरानी झोली को फैलाता' ।।

'विधवा' नामक कविता में प्रगतिवाद की अच्छी झलक है, जिसमें असहाय विधवा नारी के तिरस्कृत जीवन पर प्रकाश है—

'वह इष्टदेव के मन्दिर की पूजा-सी,
वह दीपशिखा-सी शान्त भाव में लीन ।
दलित भारत की ही विधवा है' ।।

पन्तजी की कविताओं में जगत् के जीर्ण पत्रों को शीघ्र झरने का विवेचन है—

'द्रुत झरो जगत् के जीर्ण पत्र
हे त्रस्त ध्वस्त ! हे शुष्क शीर्ण' !

इसी प्रकार अन्य कविताओं में भी प्रगतिवाद का निरूपण है—

'बाँसों का झुरमुट—
सन्ध्या का झुटपुट—
हैं चहक रही चिड़ियाँ
टी-वी-टी टुट टुट' ।

इन दोनों कवियों के अतिरिक्त बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' तथा रामधारी सिंह 'दिनकर' ने भी अपनी कविताओं में प्रगतिवाद को प्रश्रय दिया है । यहाँ दिनकर द्वारा रचित एक कविता उपस्थित की जा रही है—

'श्वानों को मिलता दूध-वस्त्र,
भूखे बालक अकुलाते हैं ।
माँ की हड्डी से चिपक ठिठुर,
जाड़े की रात बिताते हैं' ।।
'युवती की लज्जा वसन बेच,
जब व्याज चुकाये जाते हैं ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिल मालिक तेल फुलेलों पर,
पानी-सा द्रव्य बहाते हैं' ॥

सुभद्राकुमारी चौहान ने भी रामधारी सिंह 'दिनकर' के समान शोषण के विरुद्ध अपने स्वरों का उद्घोष किया है। इसी प्रकार वर्तमान युग के अनेक कवियों ने प्रगतिवादी रचनाएँ की हैं, जिनमें गिरिजाकुमार माथुर, रामविलास शर्मा, केदारनाथ, गजानन माधव मुक्तिबोध तथा भवानीप्रसाद मिश्र आदि मुख्य हैं।

इस प्रकार आधुनिक हिन्दी साहित्य में प्रगतिवाद पल्लवित एवं पुष्पित होता रहा।

(४) प्रयोगवाद

आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रमुख वादों में प्रयोगवाद वर्तमान युग का विशिष्ट वाद है। प्रगतिवादी कविताओं के अनन्तर प्रयोगवादी कविताओं का श्रीगणेश हुआ। वास्तव में ये दोनों वाद छायावाद की प्रतिक्रिया में प्रारम्भ तथा विकसित हुए।

प्रयोगवादी कविताओं के प्रवर्तक 'अज्ञेयजी' माने जाते हैं। इस सम्बन्ध में उनका कथन है कि प्रयोग सभी कालों के कवियों ने किये हैं। यद्यपि किसी एक काल में किसी विशेष दिशा में प्रयोग करने की प्रवृत्ति स्वाभाविक है, किन्तु कवि क्रमशः अनुभव करता आया है कि जिन क्षेत्रों में प्रयोग हुए हैं, उनसे आगे बढ़कर उन क्षेत्रों में प्रयोग करने चाहिए, जिन्हें अभी छूआ नहीं गया है या जिनको अभेद्य मान लिया गया है'।

अज्ञेयजी ने वर्तमान युग में अनेक प्रयोगवादी कविताएँ लिखकर अपने समकालीन कवियों को भी ऐसी ही कविताएँ लिखने के लिए प्रेरित किया। इन्हें इस क्षेत्र में आशातीत सफलता मिली। इन्होंने स्वयं अपनी तथा समकालीन कवियों की प्रयोगवादी 'कविताओं का संकलन 'तारसप्तक' के तीन भागों में किया। ऐसे प्रयोगवादी कवियों के नाम निम्नांकित हैं—

अज्ञेयजी का नाम प्रथम है। तत्पश्चात् गजानन माधव मुक्तिबोध, नेमिचन्द जैन, भारतभूषण अग्रवाल, प्रभाकर माचवे, गिरिजाकुमार माथुर, रामविलास शर्मा, भवानीशंकर मिश्र, शकुन्तला माथुर, हरिनारायण व्यास, शमशेर बहादुर सिंह, नरेशकुमार मेहता, रघुवीर सहाय, धर्मवीर भारती,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रतापनारायण त्रिपाठी, कीर्ति चौधरी, मदन वात्स्यायन, केदारनाथ सिंह, कुँवर नारायण, विजयदेव, नारायण साही तथा सर्वेश्वरदयाल सक्सेना।

अज्ञेयजी ने प्रयोगवादी कविताओं में नवीनता देखकर इसे 'नई कविता' कहकर अलंकृत किया।

यहाँ प्रसिद्ध प्रयोगवादी कवियों की कुछ कविताएँ उपस्थित की जा रही हैं। सर्वप्रथम अज्ञेयजी द्वारा रचित 'यह दीप अकेला' नामक प्रयोगवादी कविता की कुछ पंक्तियाँ देखिए—

'यह दीप अकेला स्नेहभरा,
है गर्व भरा मदमाता पर
इसको भी पंक्ति दे दो'।

इसी प्रकार इनकी दूसरी कविता 'नदी के द्वीप' की भी कुछ पंक्तियाँ उपस्थित हैं—

'हम नदी के द्वीप हैं!
हम नहीं कहते कि हमको छोड़कर स्रोतस्विनी बन जाय,
वह हमें आकार देती है'।

इसी प्रकार गिरिजाकुमार माथुर की 'दिया धरी' कविता की कुछ पंक्तियाँ देखिए—

'काले जंगल काले खेत, काली मिट्टी साँवरी।
धूप फूल दोना ले आती, रातें ओढ़ी कामरी'।।

इसी प्रकार भवानीप्रसाद मिश्र की भी 'गीत-फरोस' कविता की कुछ पंक्तियाँ उपस्थित हैं—

'जी हाँ, हजूर मैं गीत बेचता हूँ।
मैं तरह-तरह के,
गीत बेचता हूँ,
मैं किसिम-किसिम के गीत
बेचता हूँ'।

इस प्रकार आधुनिक हिन्दी साहित्य के वर्तमान युग में प्रयोगवाद पल्लवित और पुष्पित हो रहा है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रमुख स्थलों की सप्रसंग व्याख्या

(१) वेदने तू भी……मेरी तपन मनी।

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण श्रीमैथिलीशरण गुप्त द्वारा लिखित 'साकेत' नामक काव्य के नवम सर्ग से अवतरित किया गया है। इसमें उस समय का वर्णन है, जिस समय उर्मिला के पति लक्ष्मण अपने बड़े भाई राम के वनवास के अवसर पर उनके साथ चौदह वर्ष के लिए वन चले गये हैं। लक्ष्मण-पत्नी सती उर्मिला प्रियतम के वियोग में दुःखी है, उसे बड़ी ही पीड़ा है। वह वेदना को सम्बोधित करती हुई कहती है।

व्याख्या—विरहिणी उर्मिला का कथन है कि हे वेदने! यद्यपि सारा संसार तेरी निन्दा करता है और तुमसे घृणा करता है, परन्तु तुम मेरे लिए बड़ी अच्छी है, क्योंकि तुम मेरी हितकारिणी है। आज मैं तुझमें ही अपनी विशाल इच्छा को जान पायी हूँ, वेदना के कारण ही मुझे अपने प्रियतम की याद आ रही है। जिस प्रकार हीरे से प्रकाश की किरणें निकलती हैं, उसी प्रकार तुम मुझे जीवन में प्रकाश देने वाली है, प्रेम में दृढ़ता लाकर प्रियतम के मिलन के लिए आशा प्रदान करने वाली है। हे वेदने! तुम मेरे हृदय को निरन्तर बाण के समान पीड़ित करती रहो, जिससे मैं सावधान रहकर अपने प्रिय को स्मरण करती रहूँ। तुम्हारी पीड़ा मेरे लिए हितकर है। यद्यपि प्रिय-वियोग में रुदन के कारण मेरा शरीर आँसुओं से भीगा है, वह ठंडा नहीं होगा, क्योंकि सूर्यकान्त मणि के समान तुम उसे सदैव गर्म बनाये रखेगी।

काव्य-सौष्ठव—कवि ने प्रस्तुत पंक्तियों में उर्मिला-विरह का अच्छा चित्रण किया है। वास्तव में संयोग की अपेक्षा विरह ही प्रेम की कसौटी है, विरहाग्नि में तप्त होकर प्रेम चमक उठता है।

वेदना का अनेक रूपों में चित्रण होने के कारण यहाँ उल्लेखालंकार की छटा दर्शनीय है।

इसके अतिरिक्त हीर कनी, विशिख ऊनी तथा उपल खनी में रूपक का चमत्कार इस पद्य में चार चाँद लगा दिया है।

(२) सखि नील नमस्कार……डरता-डरता।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण श्रीमैथिलीशरण गुप्त द्वारा लिखित 'साकेत' नामक काव्य के नवम सर्ग से अवतरित किया गया है। इसमें उस समय का वर्णन है, जिस समय उर्मिला-पति लक्ष्मण अपने वड़े भाई राम के वनवास के अवसर पर उनके साथ चौदह वर्ष के लिए वन चले गये हैं। लक्ष्मण-पत्नी सती उर्मिला अपने प्रियतम के विरह में दुःखी है। वह प्रातःकालीन उदय होते हुए भगवान् सूर्य को देखकर उन पर हंस का आरोप करती हुई अपनी प्रिय सखी सुलक्षणा से कहती है।

व्याख्या—विरहिणी उर्मिला का कथन है कि हे सखी ! नीले आकाश रूपी सरोवर में यह सूर्य रूपी हंस तैरता हुआ उतर रहा है। अब तारे रूपी मोती भी शेष नहीं बचे हैं, जिनको यह चरता हुआ चल रहा है और कहीं पृथ्वी के काँटे इसके किरण रूपी हाथों में न गड़ जायें। अतः यह अपने हाथ डरते-डरते डाल रहा है।

काव्य-सौष्ठव—कवि ने प्रस्तुत पंक्तियों में रूपक तथा श्लेष दोनों अलंकारों का बड़ा ही सुन्दर वर्णन किया है, परन्तु यहाँ वर्णन-शैली में कुछ दोप है, जिसका स्पष्टीकरण निम्नांकित है—

१. हंस मोती चरता नहीं, वल्कि चूंगता है, चरना शब्द का प्रयोग पशु के लिए किया जाता है, हंस पशु नहीं पक्षी है।

२. हंस हाथ से मोती नहीं चूंगता, मुख से चूंगता है। यहाँ कर का प्रयोग किया गया है, जो दोषपूर्ण है।

(३) मुझे फूल मत······सिर पर धारो।

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण श्रीमैथिलीशरण गुप्त द्वारा लिखित 'साकेत' नामक काव्य के नवम सर्ग से अवतरित किया गया है। इसमें उस समय का वर्णन है, जिस समय उर्मिला-पति लक्ष्मण अपने वड़े भाई राम के वनवास के अवसर पर उनके साथ चौदह वर्ष के लिए वन चले गये हैं। लक्ष्मण-पत्नी सती उर्मिला अपने प्रियतम के विरह में दुःखी है। एक दिन इस विरहिणी के हृदय में काम का क्षोभ उत्पन्न करने के लिए रतिपति कामदेव पहुँचते हैं।

व्याख्या—विरहिणी उर्मिला कामदेव को सम्वोधित करती हुई कहती हैं कि हे कामदेव ! तुम मुझे फूलों के वाणों से मत मारो, मेरे मन में कामवासनाएँ जगाकर मुझे पथभ्रष्ट करने का प्रयत्न न करो। मैं अवला हूँ, वाला हूँ, विरहिणी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हूँ। अतः मेरी दीनदशा देखकर मेरे ऊपर दया करो। तुम उस वसन्त के मित्र हो, जो सभी को सुख पहुँचाता है, तुम स्वयं बुद्धिमान् हो, उचित-अनुचित सभी कुछ समझते हो। अतः मेरे ऊपर कठोर विष का प्रयोग न करो, काम का क्षोभ उत्पन्न न करो। फिर भी यदि तुम मुझे व्यथित या पीड़ित करने का प्रयोग करना ही चाहते हो, तो यह समझ लो, 'तुम्हारा सभी प्रयत्न व्यर्थ जायेगा। अतः तुम कोई प्रयत्न न करो, क्योंकि मैं सती नारी हूँ, सांसारिक सुखों को भोगने वाली नारी नहीं हूँ, जिसके लिए तुम यह जाल फैला रहे हो। संसारी विषय-वासना वाली नारी ही तुम्हारे जाल में वशीभूत हो सकती हैं, मेरे समान सती नारी नहीं। यदि इतने पर भी तुम नहीं मानते हो, अपने को बलशाली मानते हो, तो मेरे ललाट के लाल सिन्दूरविन्दु को देखो और इसे भगवान् शिव का तृतीय लाल नेत्र (अग्निनेत्र) समझो। जिस प्रकार भगवान् का तृतीय नेत्र तुम्हें जलाकर भस्म कर दिया था, उसी प्रकार लाल सिन्दूरविन्दु भी तुम्हें जलाकर भस्म कर देगा। हे कामदेव ! यदि तुम्हें अपने रूप का घमण्ड है, तो उसे मेरे पति के रूप पर न्योछावर कर दो, वे तुम्हारे ऐसे करोड़ों कामदेव के समान सुन्दर हैं। यदि तुम्हें अपनी पत्नी रति के सौन्दर्य का गर्व है कि वह बहुत सुन्दर है, तो वह मेरे सामने तुच्छ है, मेरे चरण की धूलि लेकर उस रति के सिर पर डाल दो।

काव्य-सौष्ठव—कवि ने प्रस्तुत पंक्तियों में वियोगिनी सती उर्मिला के चरित्र पर बड़ा ही सुन्दर प्रकाश डाला है।

१. कामदेव के विषय में यह प्रसिद्ध है कि उसे सुमनसर, पुष्पधन्वा इत्यादि कहा जाता है, क्योंकि उसके धनुष-बाण पुष्प के ही होते हैं, जिसके द्वारा वह मनुष्यों-देवताओं तथा सभी युवक-युवतियों के मन में काम का क्षोभ पैदा करता है, परन्तु सती नारी के सामने उसका वश नहीं चलता। सती उर्मिला के समक्ष उसे पराजित होना पड़ा।

२. 'काम-दहन' की कथा प्रसिद्ध है। एक बार तपस्या करते हुए भगवान् शिव के मन में कामदेव ने क्षोभ उत्पन्न कर दिया था, जिससे वे कुपित होकर ललाट के तृतीय अग्निनेत्र से उसे जलाकर भस्म कर दिये—

'जब सिव तीसर नेत्र उघारा। चितवत काम भयउ जरि छारा' ॥

३. इन पंक्तियों में अनुप्रासालंकार की छटा दर्शनीय है।

(४) बीती विभावरी……रमणागरी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण श्रीजयशंकर प्रसाद द्वारा लिखित 'झरना' नामक काव्य से अवतरित किया गया है। इसके भीतर कवि ने लोक को जागरण का सन्देश दिया है।

व्याख्या—कवि का कथन है कि एक सखी दूसरी सखी से कह रही है कि हे सखी! जागो, अब रात व्यतीत हो गयी। उषा रूपी चतुर नारी आकाश रूपी पनघट पर तारा रूपी घड़ों को डुबा रही है, अब तारे आकाश में विलीन होकर छिप रहे हैं। प्रातःकाल होते ही पक्षियों का समूह कुल-कुल ध्वनि कर रहा है, कोमल-कोमल पत्ते हिल रहे हैं। देखो, ये लताएँ भी नवीन मधुर रसों से भर गयीं।

काव्य-सौष्ठव—कवि ने प्रस्तुत पंक्तियों में प्रभात के वर्णन के साथ-साथ जागरण का अच्छा सन्देश दिया है। यहाँ रूपक अलंकार की छटा दर्शनीय है। इसके साथ ही यहाँ मानवीकरण तथा छायावाद की अच्छी झलक है।

(५) कौन हो तुम वसन्त······मंद बयार।

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखित 'कामायनी' नामक महाकाव्य के 'श्रद्धा' सर्ग से अवतरित किया गया है। इसके भीतर उस समय का वर्णन है, जिस समय प्रलय के जलप्लावन के उपरान्त श्रद्धा मनु के निकट पहुँचती है और उसे देखकर वे उससे परिचयात्मक प्रश्न करते हैं।

व्याख्या—कवि का कथन है कि मनु श्रद्धा से उसका परिचय पूछते हुए कहते हैं कि मेरे इस नीरस जीवन में सरसता का सन्देश देने वाली अत्यन्त सुकोमल वसन्त के दूत के समान, घने अन्धकार में बिजली की चञ्चल रेखा के समान तथा भीषण गर्मी में धीरे-धीरे प्रवाहित होने वाली हवा के समान तुम कौन हो?

काव्य-सौष्ठव—कवि ने प्रस्तुत पंक्तियों में अपरिचित मनु-श्रद्धा के प्रथम साक्षात्कार का अच्छा वर्णन किया है। यहाँ संयोग श्रृंगार तथा उपमा अलंकार का अच्छा चित्रण है।

(६) भरा था मन में······प्यारी सन्तान।

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण श्रीजयशंकर प्रसाद द्वारा लिखित 'कामायनी' नामक महाकाव्य के 'श्रद्धा' सर्ग से अवतरित किया गया है। इसके भीतर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उस समय का वर्णन है, जिस समय प्रलय के जलप्लावन के उपरान्त श्रद्धा मनु के निकट पहुँचती है और उनके परिचयात्मक प्रश्न का उत्तर देती हुई कहती है ।

व्याख्या—कवि का कथन है कि मनु के पूछने पर श्रद्धा उनसे अपना परिचय देती हुई कहती है कि मैं अपने पिता की प्यारी सन्तान हूँ । मेरे मन में ललित कला के ज्ञान की बड़ी जिज्ञासा थी कि मैं गन्धर्वलोक में जाकर जानकारी प्राप्त करूँ, इसी बीच में जलप्लावन हो गया, उसके अन्त में मैं यहाँ चली आयी, परन्तु आप बड़े चिन्तित दृष्टिगत होते हैं ।

काव्य-सौष्ठव—कवि ने प्रस्तुत पंक्तियों में श्रद्धा के ललित गान की जिज्ञासा का सुन्दर वर्णन किया है ।

(७) तपस्वी, क्यों······कैसा उद्वेग ?

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण श्रीजयशंकर प्रसाद द्वारा लिखित 'कामायनी' महाकाव्य के श्रद्धा सर्ग से अवतरित किया गया है । इसके भीतर उस समय का वर्णन है, जिस समय प्रलय के जलप्लावन के उपरान्त श्रद्धा मनु के निकट पहुँच कर उनकी उदासी तथा दुःखित मन का कारण पूछती है ।

व्याख्या—कवि का कथन है कि श्रद्धा मनु को सम्बोधित करते हुए कहती है कि हे तपस्वी ! तुम इतने उदास क्यों हो ? तुम्हारे मन में इतनी पीड़ा क्यों है ? दुःख की बात है, तुम इतने अधिक हताश क्यों दृष्टिगत होते हो ? तुम्हारे मन में यह हलचल क्यों है ?

काव्य-सौष्ठव—कवि ने प्रस्तुत पंक्तियों में श्रद्धा के हार्दिक भावों का बड़ा ही सुन्दर चित्रण किया है ।

(८) दुःख की पिछली······सुख गात ।

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण श्रीजयशंकर प्रसाद द्वारा लिखित 'कामायनी' महाकाव्य के 'श्रद्धा सर्ग से अवतरित किया गया है ।' इसके भीतर उस समय का चित्रण है, जिस समय प्रलय के जलप्लावन के उपरान्त श्रद्धा मनु के निकट पहुँच कर उन्हें दुःखित देखकर सुखी होने का आश्वासन दे रही है ।

व्याख्या—कवि का कथन है कि श्रद्धा मनु से कहती है कि हे तपस्वी ! दुःख रूपी रात्रि के समाप्त होने पर सुख रूपी दिन का नवीन प्रभात दृष्टिगत होता है । दुःख-सुख दोनों के बीच में एक झीना नीला परदा पड़ा हुआ है,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिसमें सुख-शरीर छिपा हुआ है। जिस प्रकार रात के वाद दिन और दि के वाद रात्रि का आवागमन होता है, उसी प्रकार दुःख के वाद सुख औ सुख के वाद दुःख भी आता-जाता रहता है।

काव्य-सौष्ठव—कवि ने प्रस्तुत पंक्तियों में प्रकृति के सुन्दर नियमों प वड़ा ही सुन्दर प्रकाश डाला है। कोई भी समय एक समान नहीं होता, उस परिवर्तन होता रहता है। अतः प्रकृति के इस नियम को समझते हुए दुः पड़ने पर दुःखी या निराश नहीं होना चाहिए, क्योंकि सुख एक परदा भीतर छिपा हुआ है, जहाँ दुःख का समय समाप्त हुआ, तुरन्त सुख दृष्टिग होने लगता है।

(९) प्रकृति के यौवन······उनकी धूल।

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण श्रीजयशंकर प्रसाद द्वारा लिखित 'कामायनी नामक महाकाव्य के श्रद्धा सर्ग से अवतरित किया गया है। इसके भीतर उ समय का वर्णन है, जिस समय प्रलय के जलप्लावन के उपरान्त श्रद्धा म के निकट पहुँचकर उन्हें निराश होने पर जीवन में आशा के जागरण क सन्देश देती है।

व्याख्या—कवि का कथन है कि श्रद्धा मनु से कहती है कि प्रकृति यौवन का शृंगार वासी पुष्पों से नहीं होता, वे उसकी शोभा वढ़ा ही नह सकते, शृंगार के लिए नूतन पुष्प की आवश्यकता है। वासी फूल तो मलि होकर धूल में धुसरित हो जायेंगे, क्योंकि उनके भीतर न तो सौन्दर्य ही रहत है, न सद्गन्ध ही होता है।

काव्य-सौष्ठव—कवि ने प्रस्तुत पंक्तियों में प्रकृति के नवीन शृंगार क अपेक्षा पर सुन्दर प्रकाश डाला है।

(१०) डरो मत अरे ·····सकल समृद्धि।

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण श्रीजयशंकर प्रसाद द्वारा लिखित 'कामायनी नामक महाकाव्य के श्रद्धा सर्ग से अवतरित किया गया है। इसके भीतर उ समय का चित्रण है, जिस समय प्रलय के जलप्लावन के पश्चात् श्रद्धा म के निकट उपस्थित होकर उदासचित्त मनु को उत्साहित करती है।

व्याख्या—कवि का कथन है कि श्रद्धा मनु को आत्मसमर्पण करने बाद उनसे कहती है कि आप देवताओं की सन्तान है, आपको भयभीत हों

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की क्या आवश्यकता ? आप निर्भय होकर मेरे साथ रहिए, आपके सभी कार्य मंगलमय होंगे और जितनी समृद्धियाँ हैं, वे समस्त स्वयं खिचकर निकट चली आयेंगी।

काव्य-सौष्ठव—कवि ने प्रस्तुत पंक्तियों में श्रद्धा के सुन्दर मंगलमय विचारों का अच्छा चित्रण किया है। इन पंक्तियों में जीवन में जागरण का संदेश है।

(११) है अमानिशा उगलता······जलती मसाल।

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण श्रीसूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' द्वारा लिखित 'अपरा' नामक काव्य के 'राम की शक्तिपूजा' नामक कविता से अवतरित किया गया है। इसके भीतर उस समय का वर्णन है, जिस समय लंका के रणक्षेत्र में आश्विन कृष्ण अमावस्या को प्रथम दिन राम-रावण युद्ध हुआ। युद्ध-विराम के बाद कवि उस दिन की रात्रि का वर्णन कर रहा है।

व्याख्या—कवि का कथन है कि अमावस्या की रात्रि है। आकाश घना अन्धकार उगल रहा है। रात्रि के कारण दिशाओं का ज्ञान भी नहीं हो रहा है। हवा भी स्तब्ध हो गयी है। पीछे अथाह समुद्र अबाध गति से गर्जन कर रहा है। पर्वत ध्यानमग्न होकर शान्त खड़ा है। केवल मसाल जल रही है।

काव्य-सौष्ठव—प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने अमावस्या की काली रात्रि का बड़ा ही सुन्दर चित्रण किया है।

(१२) स्थिर राघवेन्द्र······जो दुराक्रान्त।

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण श्रीसूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' द्वारा लिखित 'अपरा' नामक काव्य के 'राम की शक्तिपूजा' नामक कविता से अवतरित किया गया है। इसके भीतर उस समय का वर्णन है, जिस समय लंका के रणक्षेत्र में राम-रावण युद्ध हुआ। युद्ध-विराम के पश्चात् रात्रि वेला में सुवेल पर्वत पर राम रावण के दुर्जेय पराक्रम से प्रभावित होकर चिन्तित हैं।

व्याख्या—कवि का कथन है कि स्थिरमति राम को रह-रहकर एक शंका व्यथित कर रही है। उनके इस जीवन में रावण की जय और अपने पराजय होने की शंका व्यथित कर रही है। जो हृदय आज तक कभी भी दमनीय

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शत्रुओं के कारण थकान का अनुभव न कर सका और दश हजार में एक भी लक्ष्य में कोई भी शत्रु नहीं था, जो पराजित न हो सका हो।

काव्य-सौष्ठव—प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने पुरुषोत्तम राम के हृदय में राम-रावण युद्ध में जय-पराजय की शंका का अच्छा निरूपण किया है।

(१३) कल लड़ने को……कुमारिका छबि, अच्युत।

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण श्रीसूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' द्वारा लिखित 'अपरा' नामक काव्य के 'राम की शक्तिपूजा' नामक कविता से अवतरित किया गया है। इसके भीतर उस समय का वर्णन है, जिस समय लंका के रणक्षेत्र में राम-रावण युद्ध हुआ। युद्धविराम के पश्चात् रात्रि वेला में पुरुषोत्तम राम रावण के दुर्जेय पराक्रम से चिन्तित होकर कल के युद्ध की योजना बना रहे हैं।

व्याख्या—कवि का कथन है कि प्रातःकाल युद्ध की योजना तो बन रही है, परन्तु मन व्याकुल है, उद्यत होकर भी मन में असमर्थता है। इसी समय पुरुषोत्तम राम के हृदय में अचानक पृथ्वीपुत्री कुमारी जानकी की वह छवि जागृत हो गयी, जिसे उन्होंने फुलवारी में देखी थी।

काव्य-सौष्ठव—प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने राम के निराश हृदय में अचानक कुमारी जानकी की स्मृति के कारण सरस आशा के संचार का अच्छा वर्णन किया है।

(१४) देखते हुए……प्रथमोत्थान पतन।

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण श्रीसूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' द्वारा लिखित 'अपरा' नामक काव्य के 'राम की शक्तिपूजा' नामक कविता से अवतरित किया गया है। इसके भीतर उस समय का वर्णन है, जिस समय लंका के रण-क्षेत्र में राम-रावण युद्ध हुआ। युद्धविराम के पश्चात् रात्रि वेला में पुरुषोत्तम राम को पृथ्वीतनया कुमारी जानकी की वह छवि याद आयी, जिसे उन्होंने महाराजा जनक की फुलवारी में प्रथम बार देखा था।

व्याख्या—कवि का कथन है कि पुरुषोत्तम राम ध्यानावस्थित होकर जनकनन्दिनी के सौन्दर्य को स्मरण करने लगे, उस समय उन्हें फुलवारी में फूलों का दर्शन, लताओं के झुरमुट में जनककुमारी सीता का दर्शन, नेत्रों का

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नेत्रों से मिलन, मधुर वार्तालाप, पलकों का पलकों पर नवीन उत्थान-पतन इत्यादि एक-एक करके सम्पूर्ण बातें स्मरण होने लगीं।

काव्य-सौष्ठव — प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने राम के पूर्वानुराग की स्मृति का अच्छा वर्णन किया है।

(१५) काँपते हुए किसलय······कम्पन तुरीय।

प्रसंग — प्रस्तुत अवतरण श्रीसूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' द्वारा लिखित 'अपरा' नामक काव्य के 'राम की शक्तिपूजा' नामक कविता से अवतरित किया गया है। इसके भीतर उस समय का वर्णन है, जिस समय लंका के रणक्षेत्र में राम-रावण युद्ध हुआ। युद्धविराम के पश्चात् रात्रिवेला में पुरुषोत्तम राम को अवनीतनया कुमारी जानकी की वह छवि याद आयी, जिसे उन्होंने महाराजा मिथिलेश की फुलवारी में प्रथम बार देखा था।

व्याख्या—कवि का कथन है कि राम ध्यानावस्थित होकर जनकनन्दिनी का स्मरण करने लगे, उस समय वृक्षों के हिलते हुए नवीन पराग-समूह का झरना, नवीन जीवन के परिचय से पक्षियों का कलरव करना, वृक्षों का मलय पवन से पुलकित होना, स्वर्गीय सूर्य की किरणों का फैलना तथा प्रथम बार अपने स्वजन का अनुभव करके जानकी के सुन्दर नेत्रों में तुरीयावस्था का आनन्द प्राप्त करना इत्यादि सभी अतीत की बातें ध्यान में आने लगीं।

काव्य-सौष्ठव — प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने राम के पूर्वानुराग की स्मृति का अच्छा चित्र उपस्थित किया है।

'तुरीय' एक अवस्था है, जिसमें तपस्वी पहुँचकर ब्रह्मसुख का अनुभव करते हैं।

(१६) सिहरा तन······हृदय में आई भर।

प्रसंग — प्रस्तुत अवतरण श्रीसूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' द्वारा लिखित 'अपरा' नामक काव्य के 'राम की शक्तिपूजा' से अवतरित किया गया है। इसके भीतर उस समय का वर्णन है, जिस समय लंका के रणक्षेत्र में राम-रावण युद्ध हुआ। युद्धविराम के पश्चात् रात्रिवेला में पुरुषोत्तम राम ध्याना-वस्थित होकर महाराजा जनक की फुलवारी में जनकनन्दिनी के प्रथम मिलन की स्मृति कर रहे हैं।

व्याख्या — कवि का कथन है कि फुलवारी में जनककिशोरी जानकी की

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

याद आते ही राम का शरीर पुलकायमान हो गया, क्षण मात्र के लिए वे अपने को भूल गये। सारा तन सिहर उठा। ऐसा प्रतीत होने लगा, मानो पुनः भगवान् शिव का पिनाक भंग करने के लिए दोनों हाथ ऊपर उठ गये हों। जनकनन्दिनी के ध्यान में मग्न राम के होठों पर मुस्कराहट आ गयी। तदनन्तर समस्त विश्व को विजय करने की भावनां उनके मन में होने लगी।

काव्य-सौष्ठव – प्रस्तुत पंक्तियों के भीतर कवि ने पुरुषोत्तम राम के निराश हृदय की आशा का अच्छा चित्रण किया है।

(१७) निशि हुई विगत······दृढ़ मुकुटबन्ध।

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण श्रीसूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' द्वारा लिखित 'अपरा' नामक काव्य के 'राम की शक्तिपूजा' से अवतरित किया गया है। इसके भीतर उस समय का वर्णन है, जिसमें पुरुषोत्तम राम रावण के साथ प्रथम दिन के युद्ध के पश्चात् रात्रि में चिन्तित होकर मन्त्रियों से विचार-विमर्श किये, मन में बड़ी प्रसन्नता हुई और प्रातःकाल अरुणोदय हुआ।

व्याख्या—कवि का कथन है कि प्रथम युद्ध की रात्रि व्यतीत हो गयी। आकाश के मस्तक पर भगवान् सूर्य की प्रथम किरण चमक उठी। राम के नेत्रों में अपूर्व प्रकाश का समूह छा गया। आज उनके हाथ में धनुष-बाण नहीं है और न तो कन्धे पर तरकस हैं। आज घनी जटाओं का समूह और उसमें बंधा हुआ मुकुट भी सुशोभित नहीं है।

काव्य-सौष्ठव – कवि ने प्रस्तुत पंक्तियों में पुरुषोत्तम राम के हृदयोल्लास का अच्छा वर्णन किया है।

(१८) दिवसावसान का······उसमें हास-विलास।

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण श्रीसूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' द्वारा लिखित 'अपरा' नामक काव्य के 'सन्ध्या-सुन्दरी' कविता से अवतरित किया गया है। इसके भीतर कवि ने सन्ध्या-सुन्दरी का वर्णन किया है।

व्याख्या—कवि का कथन है कि दिन का अन्त होने जा रहा है। बादलों से आच्छादित आकाश से सन्ध्या रूपवती परी के समान धीरे-धीरे इस पृथ्वी पर उतर रही है, चारों ओर शान्तिपूर्ण अन्धकार फैल रहा है, इसमें चाञ्चल्य का कहीं भी नाम नहीं है। प्रकाश और अन्धकार सन्ध्या रूपी परी के दो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुन्दर ओठ हैं, जिनमें हास्य और क्रीड़ा का नाम भी नहीं है, बल्कि गम्भीरता भरी हुई है, जिससे सौन्दर्य बढ़ गया है।

काव्य-सौष्ठव—कवि ने प्रस्तुत पंक्तियों में सन्ध्या-परी के वर्णन में मानवीकरण का अच्छा चित्रण किया है, जिससे यहाँ छायावाद का चमत्कार दर्शनीय है। कवि के इस प्राकृतिक वर्णन में रूपक अलंकार का चमत्कार है।

(१९) हँसता है तो केवल तारा······अम्बरपथ से चली।

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण श्रीसूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' द्वारा लिखित 'अपरा' नामक काव्य के 'सन्ध्यासुन्दरी' कविता से अवतरित किया गया है। इसके भीतर कवि ने सन्ध्यासुन्दरी पर प्रकाश डाला है।

व्याख्या—कवि का कथन है कि सुन्दरी परी के समान सन्ध्यासुन्दरी के काले केशों में एक मात्र एक नक्षत्र गुँथा हुआ चमक रहा है, जो हृदय-साम्राज्ञी सन्ध्या रानी का अभिषेक कर रहा है। यह सन्ध्यासुन्दरी आलस्य अथवा मादकता की लता के समान है, पर उसमें कोमलता की कलिका लगी हुई है। सुखमय शान्ति के कन्धों पर अपनी बाँहों को डालकर छाया के समान वह आकाशमार्ग से पृथ्वी की ओर चली आ रही है।

काव्य-सौष्ठव—कवि ने प्रस्तुत पंक्तियों में सन्ध्यापरी के वर्णन में अच्छा प्रकृतिचित्रण किया है। यहाँ मानवीकरण में छायावाद की छटा दर्शनीय है। इसके भीतर रूपक का अच्छा चित्रण है।

(२०) वह इष्टदेव के······की ही विधवा है।

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण श्रीसूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' द्वारा लिखित 'अपरा' नामक काव्य के 'विधवा' कविता से अवतरित किया गया है। इसके भीतर कवि ने विधवा की दयनीय दशा का वर्णन किया है।

व्याख्या—कवि का कथन है कि विधवा नारी अपने इष्ट देवता के मन्दिर की भाँति और दीपक की शिखा के समान शान्त भाव से लीन रहने वाली है। वह ऐसी दृष्टिगत होती है मानो वह क्रूर काल की प्रलयंकारी एक स्मृति की रेखा हो और टूटे हुए तरु की छुटी हुई लता-सी दीन-हीन लता हो। यह दलित भारत की विधवा है।

काव्य-सौष्ठव—कवि ने प्रस्तुत पंक्तियों में असहाय विधवा नारी का बड़ा ही मार्मिक चित्र उपस्थित किया है। यहाँ उपमा की छटा दर्शनीय है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(२१) प्रथम रश्मि······गाना।

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण श्रीसुमित्रानन्दन पन्त द्वारा लिखित 'वीणा' नामक काव्य के 'प्रथम रश्मि' कविता से अवतरित किया गया है। इसके भीतर कवि ने प्रतीकात्मक वर्णन किया है।

व्याख्या—कवि का कथन है कि हे बालविहंगिनि ! रात्रि के समाप्त होने तथा सूर्य के प्रकाश के प्रथम किरणों के आगमन का आभास तथा उसकी पहचान का पता तुम्हें कैसे प्राप्त हुआ ? साथ ही बड़े आश्चर्य की बात है कि संगीत का सुमधुर कंठ तुम्हें कहाँ से मिला ? क्योंकि जैसा तुम्हारा ज्ञान है, वैसा मानव-जगत् में मानव को भी अप्राप्य है।

काव्य-सौष्ठव—कवि ने प्रस्तुत पंक्तियों में प्रतीक का अच्छा चित्रण किया है। ऐसा प्रतीत होता है, जैसे किसी परिचित व्यक्ति से बातचीत किया जा रहा है। यहाँ संगीत तथा प्राकृतिक छटा दर्शनीय है।

(२२) सोई थी तू······जूगुनू नाना।

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण श्रीसुमित्रानन्दन पन्त द्वारा लिखित 'वीणा' नामक काव्य के 'प्रथम रश्मि' कविता से अवतरित किया गया हैं। इसके भीतर कवि ने प्रतीकात्मक वर्णन किया है।

व्याख्या—कवि का कथन है कि हे बालविहंगिनि ! तू अपने पंखों से अपने शरीर को ढक कर अपने घोंसले में सुख की नींद सो रही थी और पहरेदार के रूप में असंख्य जुगनू तुम्हारे द्वार के बाहर घूम-घूम कर झूम-झूम रहे थे।

काव्य-सौष्ठव—कवि ने प्रस्तुत पंक्तियों में प्रतीक का अच्छा निरूपण किया है। यहाँ संगीत तथा प्राकृतिक सुषमा दर्शनीय है।

(२३) शान्त स्निग्ध······विभा से भर।

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण श्रीसुमित्रानन्दन पन्त द्वारा लिखित 'गुञ्जन' नामक काव्य के 'नौका-विहार' कविता से अवतरित किया गया है। इसके भीतर नौका-विहार का मनोहर चित्र अंकित है।

व्याख्या—कवि का कथन है कि चारों ओर शान्तिदायिनी मधुर तथा प्रकाशयुक्त चाँदनी फैली हुई है। आकाश स्वच्छ तथा स्थिर है और पृथ्वी शब्दहीन—शान्त है। दूध के समान श्वेत बालू के पर्यंङ्क पर थकी हुई तथा बेचैन स्थिर एवं क्षीण अंगों वाली तथा ग्रीष्म द्वारा बलहीन की हुई गंगा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तापसबालिका के समान लेटी हुई है। लहरों के ऊपर चन्द्रमा का प्रतिविम्ब ऐसा प्रतीत होता है, मानो वह तापस बाला गंगा का शशिमुख हो, जिसे वह अपनी कोमल लहर रूपी हाथ पर रखे हुए है। उसके हृदय पर कोमल बाल (सेवार इत्यादि) बिखरे हुए हैं। उस गंगा रूपी तापस बाला के गोरे अंगों पर तारों से जगमगाते हुए आकाश का प्रतिविम्ब रूपी नीला वस्त्र काँपता हुआ लहरा रहा है। चन्द्रकिरणों से चमकती हुई गोल-गोल तथा सुन्दर लहरें ऐसी प्रतीत होती हैं, मानो हिलती हुई नीली साड़ी की सिकुड़न हों।

काव्य-सौष्ठव—कवि ने प्रस्तुत पंक्तियों में प्राकृतिक रमणीयता के साथ-साथ गंगा के वर्णन में बहुत सुन्दर मानवीकरण किया है। अतः यहाँ छायावाद का चमत्कार है। यहाँ रूपक अलंकार भी देखने ही योग्य है। यहाँ कवि की कल्पना, शब्द की कोमलता तथा मधुरता एवं कवि का कलाकौशल चरम विकास पर पहुँच गया है।

(२४) इस धारा-सा ही······नौकाविहार।

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण श्रीसुमित्रानन्दन पन्त द्वारा लिखित 'गुञ्जन' नामक काव्य के नौका-विहार' कविता से अवतरित किया गया है। इसके भीतर कवि ने ग्रीष्मकालीन गंगा में नौका-विहार की तुलना मानव-जीवन से की है।

व्याख्या—कवि का कथन है कि गंगा की धारा के समान ही इस जगत् का क्रम तथा जीवन का उद्‌गम निरन्तर रहने वाला है। इसकी गति, इसका संगम—सभी शाश्वत है। इस जीवन में नदियों की भाँति अनेक जनों का संगम साथ होता रहता है। आकाश में जो नीलिमा दृष्टिगत है, वह भी निरन्तर है। चन्द्रमा की ज्योत्स्ना, मुस्कान शाश्वत है, लहरियों का हास-विलास भी निरन्तर है। इस प्रकार यह जीवन भी शाश्वत नौका-विहार है। इसके कर्णधार भगवान् हैं, जो जीवन-नौका को निरन्तर चलाते हैं।

काव्य-सौष्ठव—कवि ने प्रस्तुत पंक्तियों में बड़े ही कौशल से नौका-विहार की तुलना मानव-जीवन से की है। यहाँ कवि द्वारा दार्शनिक विवेचन द्रष्टव्य है।

(२५) यह मन्दिर का दीप······गलाने को गलने दो।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण कवयित्री महादेवी वर्मा द्वारा लिखित गीतों से अवतरित किया गया है। इसके भीतर शाश्वत प्रज्वलित मन्दिर के दीप का वर्णन है।

व्याख्या—कवयित्री का कथन है कि इस मन्दिर के दीप को चुपचाप जलने दो। चाँदी के समान श्वेत रंग वाले शंख और घड़ियाल तथा सोने के रंग वाली बाँसुरी एवं सितार के स्वर आरती के समय शत-शत ध्वनियों में पूर्ण हो गये। उस समय जो सुन्दर-सुन्दर रागिनियाँ प्रतिध्वनित हो रही थी, तब पत्थर की प्रतिमा हँस रही थी और अन्धकार खेल रहा था। इष्ट-देवता अब मन्दिर में अकेला ही है। इसलिए अब इसे घुलता रहने दो।

काव्य-सौष्ठव—कवयित्री ने प्रस्तुत पंक्तियों में प्रतीकात्मक रूप से बहुत ही सुन्दर वर्णन किया है। दीपशिखा आत्मा का प्रतीक तथा अन्धकार निराशा तथा अज्ञान का प्रतीक है।

(२६) चरणों से चिह्नित……पलने दो।

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण कवयित्री महादेवी वर्मा द्वारा लिखित गीतों से अवतरित किया गया है। इसके भीतर मन्दिर की सुषमा का वर्णन किया गया है।

व्याख्या—कवयित्री का कथन है कि मन्दिर में भौंरों के चरणों से स्पर्श की गयी भूमि सोने के समान चमकीली दिखायी पड़ती है। चन्दन की देहरी पर प्रणाम करने वालों के शिरों के चिह्न बने हुए हैं। जहाँ-तहाँ फूल झड़े पड़े हैं। श्वेत अक्षत, धूप, अर्घ्य और नैवेद्य—ये सभी अधिकाधिक मात्रा में बिखरे पड़े हैं, परन्तु ये सब तो अन्धकारों में विलीन हो जायेंगें। अतः दीपक की लौ में ही सभी की अर्चित कथा व्याप्त रहने दो।

काव्य-सौष्ठव—कवयित्री ने प्रस्तुत पंक्तियों में प्रतीकात्मक रूप से बहुत ही भव्य वर्णन किया है। यहाँ दीपक का लौ (प्रकाश) गहन अन्धकार पर विजय का परिचायक है।

(२७) पल के मन के……फिर से ढलने दो।

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण कवयित्री महादेवी वर्मा द्वारा लिखित गीतों से अवतरित किया गया है। इसके भीतर मन्दिर के सौन्दर्य का चित्र है।

व्याख्या—कवयित्री का कथन है कि पल रूपी मणियों की माला को

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फेर कर विश्व का पुजारी सो गया। उसकी प्रतिध्वनि का इतिहास पाषाणों के बीच में खो गया है। यह सम्पूर्ण जीवन साँसों की समाधि के सदृश प्रतीत होता है और अब इस जीवन का मार्ग स्याही के सागर के समान ज्ञात होता है, जिसके कारण संसार के कण-कण का मुखरित स्पन्दन रुक गया है। अतः इस प्राण रूपी स्पन्दन को दीपक की ज्वाला में जलने दो।

काव्य-सौष्ठव—कवयित्री ने प्रस्तुत पंक्तियों में साधना के मार्ग पर निरन्तर बढ़ते रहने का संकेत किया है। यहाँ रूपक अलंकार का चमत्कार भी दर्शनीय है।

(२८) झंझा है दिग्भ्रान्त⋯ ⋯प्रभाती तक चलने दो।

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण कवयित्री महादेवी वर्मा द्वारा लिखित गीतों से अवतरित किया गया है। इसके भीतर मन्दिर के वैशिष्ट्य के साथ सायंकालीन दीपक का वर्णन है।

व्याख्या—कवयित्री का कथन है कि वर्षा सहित तीव्र वायु के झोंके दिशाओं का ज्ञान नष्ट कर रहे हैं। रात्रि गहरी मूर्च्छा में बेसुध सोई पड़ी है। अतः आज प्रकाश का यह छोटा पहरादार दीपक मन्दिर का पुजारी बन जाय। जब तक दिन की हलचल न लौट आवे तब तक सारी रात यह दीपक प्रतिक्षण अपने प्रकाश से युक्त होकर सदैव जलता रहेगा। मन्दिर का यह दीपक सायंकाल का दूत है। अतः प्रभात काल तक अपना प्रकाश बिखरने दो।

काव्य-सौष्ठव—कवयित्री ने प्रस्तुत पंक्तियों में मन्दिर के सायंकालीन दीपक को सन्ध्या का दूत कहा है, जो यथार्थ है।

(२९) हम नदी के द्वीप⋯⋯धारा नहीं हैं।

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण श्रीसच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' द्वारा लिखित 'हरी घास पर क्षणभर' नामक काव्य की 'नदी के द्वीप' नामक कविता से अवतरित किया गया है। इसके भीतर कवि ने नदी के द्वीप का प्रतीकात्मक वर्णन किया है।

व्याख्या—कवि का कथन है कि हम नदी के द्वीप हैं, हम यह नहीं चाहते कि नदी हमें छोड़कर बह जाये, क्योंकि हमारा रूप उसी के द्वारा निर्मित है। हमारा कोण, हमारी गली, हमारा अन्तरीय (भूमि का नुकीला भाग, जो जल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में दूर तक चला गया है); हमारा उभार, हमारा बालू, हमारा तट तथा हमारा गोलापन सभी कुछ उसी की देन है। वह हमारी निर्माता माँ है, उसी ने हमें जन्म दिया है, लेकिन हम एक द्वीप हैं, धारा नहीं हैं।

काव्य-सौष्ठव — कवि ने प्रस्तुत पंक्तियों में प्रतीकात्मक वर्णन किया है। नदी समष्टि का तथा द्वीप व्यष्टि का प्रतीक है। जिस प्रकार समाज से पृथक् व्यक्ति का कोई अस्तित्व नहीं है, उसी प्रकार नदी से पृथक् द्वीप का कोई महत्त्व नहीं।

(३०) लो पहले अपना ······ स्वर बहते हैं।

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण श्रीभवानीप्रसाद मिश्र द्वारा लिखित 'सन्नाटा' नामक कविता से अवतरित किया गया है। इसके भीतर कवि ने प्रतीकात्मक प्रकाश डाला है।

व्याख्या—कवि का कथन है कि मैं सर्वप्रथम अपना नाम बता रहा हूँ। तत्पश्चात् अपने काम पर प्रकाश डाल रहा हूँ। परन्तु मेरा नाम-काम सुनकर चौंकना नहीं। अच्छा तो सुनो। कुछ लोग मुझे शान्ति कहते हैं, कुछ लोग निस्तब्ध कहते हैं, कुछ लोग मुझे कुछ भी नहीं कहते, चुप रहते हैं, परन्तु मैं न तो शान्ति हूँ, न निस्तब्ध हूँ और न मौन हूँ, क्योंकि मुझमें स्वर है, ध्वनि है, आवाज है—मैं सन्नाटा हूँ।

काव्य-सौष्ठव — कवि ने प्रस्तुत पंक्तियों में सन्नाटा का अच्छा वर्णन किया है। वर्तमान युग की नई कविता की यह प्रतीक योजना है। सुख वैभव में नहीं आत्मानन्द में है—इस कविता से यही स्वर ध्वनित होता है। बिम्बविधान से सम्पृक्त यह कविता है। सन्नाटा में भी एक स्वर है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शास्त्री द्वितीय वर्ष

'ख' वर्ग हिन्दी सप्तम पत्र

द्वितीय भाग

लघु प्रश्न तथा उत्तर

प्रश्न १— काव्य किसे कहते हैं ? इसके कितने भेद हैं ?

उत्तर— रमणीय अर्थ के प्रतिपादक शब्द को काव्य कहते हैं। यथा- 'रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्।'

काव्य के २ भेद हैं- १- श्रव्य काव्य, २- दृश्य काव्य।

१- श्रव्य काव्य— श्रव्य काव्य के मुख्यतः २ भेद हैं- प्रबन्ध और मुक्तक।

प्रबन्ध काव्य में धारा वाहिकता होती है और उसमें किसी घटना या व्यापार का काव्यात्मक वर्णन होता है।

प्रबन्ध काव्य के भी दो भेद होते हैं- १- महाकाव्य, २- खण्डकाव्य।

प्रश्न २— महाकाव्य किसे कहते हैं ?

उत्तर— महाकाव्य की कथा में जीवन की सर्वांगीण झाँकी होती है और उसमें विविध विषयों का एक संश्लिष्ट चित्र होता है। इसका विषय महान् होता है। उसमें पुरुष तथा स्त्री दोनों प्रकार के पात्र होते हैं। उन पात्रों में एक नायक होता है। महाकाव्य का अन्त सुखान्त होता है। इसका कथानक किसी प्रसिद्ध ऐतिहासिक या पौराणिक कथा के आधार पर होता है। इसका नायक धीरोदात्त के गुणों से सम्बन्धित होता है। इसमें शृंगार, वीर, करुण अथवा शान्त रस की प्रधानता रहती है। इसके अतिरिक्त अन्य रस भी रहते हैं। इसमें प्रसिद्ध अलंकार तथा प्रकृति वर्णन भी रहता है। महाकाव्य प्रायः सर्गों या सोपानों में विभाजित रहते हैं। उदाहरण के लिए रामचरितमानस, साकेत, कामायनी तथा उर्वशी हिन्दी काव्य के प्रसिद्ध महाकाव्य हैं।

प्रश्न ३— खण्डकाव्य किसे कहते हैं ?

उत्तर— महाकाव्य में जहाँ जीवन की सम्पूर्ण झाँकी की रहती है, वहाँ खण्डकाव्य में जीवन के किसी एक पक्ष का चित्रण होता है। आकार में वह

Kirtiham Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

महाकाव्य से बहुत छोटा होता है। उदाहरण के लिए सुदामा चरित्र, जयद्रथ वध, रश्मिरथी तथा पथिक हिन्दी काव्य के प्रसिद्ध खण्डकाव्य हैं।

प्रश्न ४— मुक्तक काव्य किसे कहते हैं ?

उत्तर— मुक्तक काव्यों में कथाओं की सूत्रबद्धता या कथा की प्रवाहिकता नहीं होती। यह काव्य स्वतंत्र होता है, परन्तु इसके प्रत्येक पद आनन्ददायक होते हैं। इसके दो भेद हैं- १- गेय पद, २- सुपाठ्य पद।

उदाहरण के लिए गेय पद के अन्तर्गत मीराबाई पदावली तथा सुपाठ्य पदों में विहारी सतसई प्रसिद्ध मुक्तक काव्य हैं।

प्रश्न ५— हिन्दी काव्य का काल विभाजन कीजिए ?

उत्तर— दशवीं शताब्दी से लेकर आज तक के समय को, जिसे हिन्दी काव्य ने विभिन्न परिस्थितियों में पार किया है, उसे चार कालों में विभक्त कर सकते हैं-

हिन्दी काव्य का काल विभाजन

१- **आदिकाल—** सं० १०५० वि० से सं० १३७५ वि० तक।
२- **भक्ति काल—** सं० १३७५ वि० से सं० १७०० वि० तक।
३- **रीति काल—** सं० १७०० वि० से सं० १९०० विं० तक।
४- **आधुनिक काल—** सं० १९०० वि० से अब तक।

प्रश्न ६— आदिकाल की प्रमुख विशेषताएँ तथा २ कवियों के नाम लिखिए ?

उत्तर— आदिकाल की प्रमुख विशेषताएँ— आदिकाल की प्रमुख विशेषताएँ यह है कि यह काल लड़ाई-झगड़ों से परिपूर्ण रहा। इस काल के अन्तर्गत आने वाले सभी कवि राजाश्रित रहे। वे कविता लिखने के साथ-साथ तलवार चलाना भी जानते थे। यह ऐसा युग था कि इस काल की स्त्रियाँ भी वीरांगनाएँ होती थीं।

यह आदिकाल वीरगाथा काल के नाम से भी प्रसिद्ध है।

आदिकाल के प्रमुख २ कवि

१- चन्द्रबरदाई, २- जगनिक।

प्रश्न ७— भक्तिकाल की प्रमुख विशेषताएँ तथा २ कवियों के नाम लिखिए ?

उत्तर— भक्तिकाल की प्रमुख विशेषताएँ— आदिकाल के अवसान के बाद भक्तिकाल का श्रीगणेश हुआ। आदिकाल में लड़ाई-झगड़े होने से धन-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जन दोनों की क्षति हुई। फलतः जनता कल्याण का दूसरा मार्ग न देखकर ईश्वर के शरणापन्न हुई, ईश्वर की भक्ति में लीन हुई। भक्तिकाल २ भागों में विभाहित हो गया—

१- निर्गुण भक्ति, २- सगुण भक्ति।

भक्तिकाल के प्रमुख दो कवि

१- निर्गुण भक्ति के कवि कबीरादास।

२- सगुण भक्ति के कवि तुलसीदास।

प्रश्न ८— निर्गुण काल की प्रमुख विशेषताएँ तथा २ कवियों के नाम लिखिए ?

उत्तर— निर्गुण काल की प्रमुख विशेषताएँ— निर्गुण काल के भीतर ज्ञान और प्रेम दो प्रकार के गीत गाये गये। फलतः पहली शाखा का नाम राजाश्रयी तथा दूसरी शाखा का नाम प्रेमाश्रयी पड़ा। इन शाखाओं का लक्ष्य क्रमशः ज्ञान और प्रेम के द्वारा निर्गुण ब्रह्म को प्राप्त करना था।

ज्ञान मार्गी शाखा के प्रधान कवि— सन्त कबीरदास।

प्रेममार्गी शाखा के प्रधान कवि— मलिक मुहम्मद जायसी।

इन दोनों कवियों का मार्ग साधारण जनता के लिए बहुत ही दुरूह था।

प्रश्न ९— सगुण काल की प्रमुख विशेषताएँ तथा दो कवियों के नाम लिखिए ?

उत्तर— सगुण काल की प्रमुख विशेषताएँ— निर्गुण काल के भीतर अनेक प्रकार की अगमता देखकर कुछ कविवरों ने जनता के हृदय का आश्रय लिया। उन्हें ऐसे ब्रह्म की आवश्यकता थी, जिसके हाथ, पाँव, मुख आदि सभी अंग होते और वे मनुष्य के रूप में आकर अपने सबल हाथों से उनकी रक्षा करता एवं अपने कानों से उनकी पुकार सुनता। इस प्रकार के ब्रह्म केवल राम और कृष्ण ही हो सकते थे। परिस्थिति ने जनता के हृदय की पुकार सुन ली। फलतः तुलसी और सूर-से भक्त कवियों का उदय हुआ। ये भक्त कवि इन्हीं राम और कृष्ण का आश्रय लेकर हिन्दी काव्य में सगुण धारा के अन्तर्गत रामाश्रयी तथा कृष्णाश्रयी धारा प्रवाहित कर जनता के मुरझाये हुए हृदय-पुष्प को सरस बनाने लगे। इस काल में सगुण ब्रह्म के गीत गाये गये।

रामाश्रयी धारा के प्रधान कवि— गोस्वामी तुलसीदास।

कृष्णाश्रयी धारा के प्रधान कवि— भक्त कवि सूरदास।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रश्न १०— रीतिकाल की प्रमुख विशेषताएँ तथा दो कवियों के नाम लिखिए ?

उत्तर— रीतिकाल की प्रमुख विशेषताएँ— भक्तिकाल के समाप्त हो जाने के अनन्तर रीतिकाल का प्रादुर्भाव हुआ। यह ऐसा युग था कि सभी राजा तथा प्रजा विलासिता में मग्न थे। इस समय जितने कवि हुए, प्राय: राजाश्रित थे। अत: उन कवियों का वर्णनीय विषय वही हुआ, जो राजाओं को प्रिय था। वे शृंगार रस पूर्ण दोहे या पद बनाकर राजाओं को प्रसन्न किया करते थे। इन कवियों का प्रधान ध्येय नायिकाओं का हाव-भाव तथा कटाक्ष वर्णन करना था, परन्तु इस युग में एक ऐसे भी कवि हुए, जिन्होंने शृंगार की बहती हुई धारा को, जो विलासिता से आप्लावित होकर बह रही थी, मोड़कर अपनी ओजस्विनी वाणी के द्वारा वीर रस में परिणत कर दिया। जहाँ पायलों की झनकार सुनाई देती थी, वहाँ तलवारों की झंकार सुनाई देने लगी। इस युग में लक्ष्य तथा लक्ष्ण दोनों प्रकार के काव्य लिखे गये। लक्ष्य (कविता) लिखने वाले कवि के नाम से तथा लक्षण (छन्द, रस, अलंकार, शब्द शक्ति) लिखने वाले आचार्य के नाम से प्रसिद्ध हुए।

रीति के प्रसिद्ध कवियों के नाम

१- कवि बिहारी लाल (शृंगार रस के कवि)।

२- कवि भूषण (वीर रस के कवि)।

३- कवि चिन्तामणि त्रिपाठी (कवि तथा आचार्य)।

प्रश्न ११— आधुनिक काल की प्रमुख विशेषताएँ तथा विशिष्ट कवियों के नाम लिखिए ?

उत्तर— आधुनिक काल की प्रमुख विशेषताएँ— रीतिकाल के अवसान के बाद आधुनिक काल प्रारम्भ हुआ। इस काल में गद्य-पद्य दोनों की रचनाएँ हुईं और हो रही हैं, परन्तु यहाँ हम गद्य सम्बन्धी रचनाओं का वर्णन न करके पद्य सम्बन्धी रचनाओं का वर्णन कर रहे हैं।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के समय से पद्य काव्य की रचनाएँ प्रारम्भ हुईं, उनके समय ब्रज भाषा की प्रधानता थी, परन्तु आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के समय से खड़ी बोली हिन्दी भाषा ने अपना अस्तित्व जमा लिया। इस काल क कवियों में ऐसे प्रौढ़ कवि हुए, जिनके नाम भुलाये नहीं जा सकते-

जगन्नाथ दास 'रत्नाकर', अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', मैथिलीशरण

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुप्त, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', महादेवी वर्मा तथा रामधारी सिंह 'दिनकर' तथा 'अज्ञेय' इत्यादि। इधर कुछ वर्षों से हिन्दी काव्य में रहस्यवाद, छायावाद, प्रगतिवाद तथा प्रयोगवाद के नाम से अनेक कविताएँ प्रचलित हैं।

यद्यपि वर्तमान समय में अन्य वाद क्षीण पड़ गए हैं, परन्तु अन्तिम प्रयोगवाद की प्रगति जोरों पर है, जिसके प्रवर्तक 'अज्ञेय' जी हैं।

प्रश्न १२— काव्य में रहस्यवाद की विशेषताएँ तथा प्रमुख दो कवियों एवं उदाहरणों का वर्णन कीजिए ?

उत्तर— काव्य में रहस्यवाद की विशेषताएँ— आधुनिक हिन्दी काव्य के प्रचलित वादों में रहस्यवाद का महत्त्वपूर्ण स्थान है। जब कवि अपनी कविताओं में उस चिरन्तन शक्ति का रहस्यमय विवेचन करता है अथवा प्रकृति के रहस्य का उद्घाटन करता है, तब उस समय की कविताएँ रहस्यवाद के नाम से अभिहित होती हैं।

रहस्यवाद के प्रमुख दो कवि तथा उनकी कविताएँ

१- मैथिली शरण गुप्त—

अच्छी आँख मिचौनी खेली।
बार-बार तुम छिपो, और मैं खोजूँ तुम्हें अकेली॥

२- जयशंकर प्रसाद—

खोलो प्रियतम खोलो द्वार।
सुप्रभात मेरा भी होवे, इस रजनी का दुःख अपार।
मिट जावे जो तुमको देखूँ, खोलो प्रियतम खोलो द्वार॥

प्रश्न १३— काव्य में छायावाद की विशेषताएँ तथा प्रमुख दो कवियों एवं उदाहरणों का वर्णन कीजिए ?

उत्तर— काव्य में छायावाद की विशेषताएँ

आधुनिक हिन्दी काव्य के प्रचलित वादों में छायावाद का महत्त्वपूर्ण स्थान है। जब कवि अपनी कविताओं के प्रकृति वर्णन में मानवीकरण करता है, तब उस समय की कविताएँ छायावाद के नाम से अभिहित होती हैं।

छायावाद के प्रमुख दो कवि तथा उनकी कविताएँ

१- जयशंकर प्रसाद—

नीरव निशीथ में लतिका सी,
तुम कौन आ रही हो बढ़ती।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कोमल बाहें फैलाये सी,
आलिंगन का जादू पढ़ती ।।

२- **महादेवी वर्मा**–

रजनी ओढ़े जाती थी,
झिल मिल तारों की जाली ।
उसके विखरे वैभव पर,
जब रोती थी उजियाली ।।

प्रश्न १४– काव्य में प्रगतिवाद की विशेषताएँ तथा प्रमुख दो कवियों एवं उदाहरणों का वर्णन कीजिए ?

उत्तर– काव्य में प्रगतिवाद की विशेषताएँ– आधुनिक हिन्दी काव्य के प्रचलित वादों में प्रगतिवाद का महत्वपूर्ण स्थान है । यह वाद छायावाद के पश्चात् प्रारम्भ हुआ । अतः स्पष्ट है कि छायावाद की नींव पर प्रगतिवाद की अट्टालिका निर्मित हुई ।

इसे दूसरे शब्दों में यह कह सकते हैं कि जब छायावाद का स्वप्निल लोक कवि को आत्म तुष्टि न दे सका, तब वह इसी जगत् के सम-विषम धरातल पर उतर आया और जन जीवन की विषमताओं एवं समाज के उपेक्षित मनुष्यों को अपना विषय बनाकर प्रगति के गीत गाने लगा ।

प्रगतिवादी प्रमुख दो कवि एवं उनकी कविताएँ

१ - **सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'** -

वह आता ।
दो टूक कलेजे करता, पछताता पथ पर आता ।।
मुट्ठी भर दाने को- भूख मिटाने को,
मुँह फटी पुरानी झोली को फैलाता ।।

२- **रामधारी सिंह 'दिनकर'**–

श्वानों को मिलता दूध वस्त्र,
भूखे बालक अकुलाते हैं ।
माँ की हड्डी से चिपक ठिठुर,
जाड़े की रात बिताते हैं ।।
युवती की लज्जा बसन बेंच,
जब ब्याज चुकाये जाते हैं ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिल मालिक तेल फुलेलों पर,
पानी सा द्रव्य बहाते हैं ॥

प्रश्न १५— काव्य में प्रयोगवाद की विशेषताएँ तथा प्रमुख दो कवियों एवं उदाहरणों का वर्णन कीजिए ?

उत्तर— काव्य में प्रयोगवाद की विशेषताएँ— हिन्दी काव्य के प्रचलित वादों में प्रयोगवाद का महत्वपूर्ण स्थान है। ऐसी कविताओं के प्रवर्तक 'अज्ञेय' जी माने जाते हैं। इस सम्बन्ध में उनका कथन है कि 'प्रयोग सभी कालों में कवियों ने किये हैं। यद्यपि किसी एक काल में किसी विशेष दिशा में प्रयोग करने की प्रवृत्ति स्वाभाविक है, किन्तु कवि क्रमशः अनुभव करता आया है कि जिन क्षेत्रों में प्रयोग हुए हैं, उनसे आगे बढ़कर उन क्षेत्रों में प्रयोग करने चाहिए, जिन्हें अभी छुआ नहीं गया है या जिनको अभेद्य मान लिया गया है।

प्रयोगवादी प्रमुख दो कवि एवं उनकी रचनाएँ

१- सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'—

यह दीप अकेला स्नेह भरा।
है गर्व भरा मदमाता, पर
इसको भी पंक्ति दे दो ॥

२- गिरिजा कुमार माथुर—

काले जंगल काले खेत, काली मिट्टी साँवरी।
धूप फूल दोना ले आती, रातें ओढ़ी कामरी ॥

प्रश्न १६— निम्नलिखित सूक्ति की सप्रसंग व्याख्या कीजिए ?
'बेदने ! तू भी भली मिली।'

उत्तर— प्रसंग— प्रस्तुत अवतरण श्री मैथिली शरण गुप्त द्वारा लिखित 'साकेत' नामक काव्य के नवम सर्ग से अवतरित किया गया है। इसमें उस समय का वर्णन है, जिस समय उर्मिला के पति लक्ष्मण अपने बड़े भाई राम के साथ वनवास के अवसर पर उनके साथ चौदह वर्ष के लिए वन चले जाते हैं। लक्ष्मण पत्नी सती उर्मिला प्रियतम के वियोग में दुखी है। वह वेदना को सम्बोधित करती हुई कहती है।

व्याख्या— विरहिणी उर्मिला का कथन है कि हे वेदने ! यद्यपि सारा संसार तुम्हारी निन्दा करता है और तुमसे घृणा करता है, परन्तु तुम मेरे लिए बड़ी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अच्छी है, क्योंकि तुम मेरी हितकारिणी हो। तुम्हारे कारण ही मुझे अपने प्रियतम की याद आ रही है।

काव्य सौन्दर्य– कवि ने प्रस्तुत सूक्ति में उर्मिला विरह का अच्छा चित्रण किया है। वास्तव में, संयोग की अपेक्षा विरह ही प्रेम की कसौटी है। जब विरहावस्था में पीड़ा होती है, तब वह विरहिणी विरहाग्नि में तप्त होकर प्रियतम के प्रेम में चमक उठती है।

प्रश्न १६– निम्नलिखित सूक्ति की सप्रसंग व्याख्या कीजिए ?

'मुझे फूल मत मारो।

मैं अबला बाला बियोगिनी कुछ तो दया विचारो।।'

उत्तर– प्रसंग– प्रस्तुत अवतरण श्री मैथिलीशरण गुप्त द्वारा लिखित 'साकेत' नामक काव्य के नवम सर्ग से अवतरित किया गया है। इसमें उस समय का वर्णन है, जिस समय उर्मिला के पति लक्ष्मण अपने बड़े भाई राम के वनवास के अवसर पर उनके साथ चौदह वर्ष के लिए वन चले जाते हैं। लक्ष्मण पत्नी सती उर्मिला अपने प्रियतम के विरह में दुखी है। एक दिन इस विरहिणी के हृदय में काम का क्षोभ उत्पन्न करने के लिए रति पति कामदेव पहुँचते हैं।

व्याख्या– विरहिणी उर्मिला कामदेव को सम्बोधित करती हुई कहती है कि हे कामदेव ! तुम मुझे फूल के वाणों से मत कारो। मेरे मन में काम वासनाएँ जगाकर मुझे पथ भ्रष्ट करने का प्रयत्न न करो। मैं अबला हूँ, बाला हूँ, विरहिणी हूँ। अतः मेरी दीन दशा देखकर मेरे ऊपर दया करो।

काव्य सौन्दर्य– कवि ने प्रस्तुत सूक्ति में वियोगिनी सती उर्मिला के चरित्र पर बड़ा ही सुन्दर प्रकाश डाला है।

कामदेव के विषय में यह प्रसिद्ध है कि उसे सुमन सर, पुष्पधन्वा इत्यादि कहा जाता है, क्योंकि उसके धनुष-बाण पुष्प के ही होते हैं, जिसके द्वारा वह मनुष्यों-देवताओं तथा सभी युवक-युवतियों के मन में काम का क्षोभ पैदा करता है, परन्तु सती नारी के सामने उसका वश नहीं चलता। सती उर्मिला के समक्ष उसे पराजित होना पड़ा।

प्रश्न १७– निम्नलिखित सूक्ति की सप्रसंग व्याख्या कीजिए ?

'प्रकृति के यौवन का श्रृंगार

करेंगे कभी न बासी फूल।'

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उत्तर— प्रस्तुत अवतरण श्री जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखित 'कामायनी' नामक महाकाव्य के श्रद्धा सर्ग से अवतरित किया गया है। इसके भीतर उस समय का वर्णन है, जिस समय जल प्लावन के उपरान्त श्रद्धा, मनु के निकट पहुँचकर उन्हें निराश होने पर जीवन में आशा के जागरण का सन्देश देती हैं।

व्याख्या— कवि का कथन है कि श्रद्धा, मनु से कहती हैं कि प्रकृति के यौवन का शृंगार बासी फूलों से नहीं होता, वे उसकी शोभा बढ़ा ही नहीं सकते, क्योंकि शृंगार के लिए नूतन पुष्पों की आवश्यकता होती है। बासी फूल तो मलिन होकर धूल में धूसरित हो जाते हैं, क्योंकि उनके भीतर न तो सौन्दर्य होता है और न सद्गन्ध ही।

काव्य सौन्दर्य- कवि ने यहाँ प्रस्तुत सूक्ति में प्रकृति के नवीन शृंगार की अपेक्षा पर बल दिया है।

❖❖❖

तृतीय भाग

अति लघु प्रश्न तथा उत्तर

प्रश्न १— 'प्रिय प्रवास' काव्य की रचना किस कवि ने की है ?

उत्तर— 'प्रिय प्रवास' काव्य की रचना कवि श्री अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ने की है।

प्रश्न २— 'साकेत' नामक काव्य की रचना किस कवि ने की है?

उत्तर— 'साकेत' नामक काव्य की रचना कवि श्री मैथिलीशरण गुप्त ने की है।

प्रश्न ३— 'भारत भारती' नामक काव्य की रचना किस कवि ने की है ?

उत्तर— 'भारत भारती' नामक काव्य की रचना कवि श्री मैथिलीशरण गुप्त ने की है।

प्रश्न ४— 'पंचवटी' नामक काव्य की रचना किस कवि ने की है?

उत्तर— 'पंचवटी' नामक काव्य की रचना कवि श्री मैथिलीशरण गुप्त ने की है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रश्न ५— 'जयद्रथ वध' नामक काव्य की रचना किस कवि ने की है ?

उत्तर— 'जयद्रथ वध' नामक काव्य की रचना कवि श्री मैथिलीशरण गुप्त ने की है।

प्रश्न ६— 'द्वापर' नामक काव्य की रचना किस कवि ने की हैं?

उत्तर— 'द्वापर' नामक काव्य की रचना कवि श्री मैथिलीशरण गुप्त ने की है।

प्रश्न ७— 'रंग में भंग' नामक काव्य की रचना किस कवि ने की है ?

उत्तर— 'रंग में भंग' नामक काव्य की रचना कवि श्री मैथिलीशरण गुप्त ने की है।

प्रश्न ८— 'कामायनी' नामक काव्य की रचना किस कवि ने की है ?

उत्तर— 'कामायनी' नामक काव्य की रचना कवि श्री जयशंकर प्रसाद ने की है।

प्रश्न ९— 'कामायनी' किस प्रकार का काव्य है ?

उत्तर— 'कामायनी' महाकाव्य है।

प्रश्न १०— 'कामायनी' नामक महाकाव्य में कितने सर्ग हैं ?

उत्तर— 'कामायनी' नामक महाकाव्य में १८ सर्ग हैं।

प्रश्न १२— 'झरना' नामक काव्य की रचना किस कवि ने की है?

उत्तर— 'झरना' नामक काव्य की रचना कवि जयशंकर प्रसाद ने की है।

प्रश्न १३— 'लहर' नामक काव्य की रचना किस कवि ने की हैं?

उत्तर— 'लहर' नामक काव्य की रचना कवि श्री जयशंकर प्रसाद ने की है।

प्रश्न १४— 'आँसू' नामक काव्य की रचना किस कवि ने की है?

उत्तर— 'आँसू' नामक काव्य की रचना कवि श्री जयशंकर प्रसाद ने की है।

प्रश्न १५— 'परिमल' नामक काव्य की रचना किस कवि ने की है ?

उत्तर— 'परिमल' नामक काव्य की रचना कवि श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ने की है।

प्रश्न १६— 'गीतिका' नामक काव्य की रचना किस कवि ने की है ?

उत्तर— 'गीतिका' नामक काव्य की रचना कवि श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ने की है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रश्न १७— 'अनामिका' नामक काव्य की रचना किस कवि ने की है ?

उत्तर— 'अनामिका' नामक काव्य की रचना कवि श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ने की है ।

प्रश्न १८— 'अपरा' नामक काव्य की रचना किस कवि ने की है?

उत्तर— 'अपरा' नामक काव्य की रचना कवि श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ने की है ।

प्रश्न १९— 'पल्लव' नामक काव्य की रचना किस कवि ने की है?

उत्तर— 'पल्लव' नामक काव्य की रचना कवि श्री सुमित्रानन्दन पन्त ने की है ।

प्रश्न २०— 'पल्लविनी' नामक काव्य की रचना किस कवि ने की है ?

उत्तर— 'पल्लविनी' नामक काव्य की रचना कवि श्री सुमित्रानन्दन पन्त ने की है ।

प्रश्न २१— 'वीणा' नामक काव्य की रचना किस कवि ने की है?

उत्तर— 'वीणा' नामक काव्य की रचना कवि श्री सुमित्रानन्दन पन्त ने की है ।

प्रश्न २२— 'ग्रन्थि' नामक काव्य की रचना किस कवि ने की है?

उत्तर- 'ग्रन्थि' नामक काव्य की रचना कवि श्री सुमित्रानन्दन पन्त ने की है ।

प्रश्न २३— 'गुञ्जन' नामक काव्य की रचना किस कवि ने की है?

उत्तर— 'गुञ्जन' नामक काव्य की रचना कवि श्री सुमित्रानन्दन पन्त ने की है ।

प्रश्न २४— 'युगान्त' नामक काव्य की रचना किस कवि ने की है?

उत्तर— 'युगान्त' नामक काव्य की रचना कवि श्री सुमित्रानन्दन पन्त ने की है ।

प्रश्न २५— 'युगवाणी' नामक काव्य की रचना किस कवि ने की है ?

उत्तर— 'युगवाणी' नामक काव्य की रचना कवि श्री सुमित्रानन्दन पन्त ने की है ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रश्न २६— 'ग्राम्या' नामक काव्य की रचना किस कवि ने की है?

उत्तर— 'ग्राम्या' नामक काव्य की रचना कवि श्री सुमित्रानन्दन पन्त ने की है।

प्रश्न २७— 'स्वर्ण किरण' नामक काव्य की रचना किस कवि ने की है ?

उत्तर— 'स्वर्ण किरण' नामक काव्य की रचना कवि श्री सुमित्रानन्दन पन्त ने की है।

प्रश्न २८— 'स्वर्ण धूलि' नामक काव्य की रचना किस कवि ने की है ?

उत्तर— 'स्वर्ण धूलि' नामक काव्य की रचना कवि श्री सुमित्रानन्दन पन्त ने की है।

प्रश्न २९— 'मधु ज्वाला' नामक काव्य की रचना किस कवि ने की है ?

उत्तर— 'मधु ज्वाला' नामक काव्य की रचना कवि श्री सुमित्रानन्दन पन्त ने की है।

प्रश्न ३०— 'नीहार' नामक काव्य की रचना किस कवि ने की है?

उत्तर— 'नीहार' नामक काव्य की रचना कवियित्री महादेवी वर्मा ने की है।

प्रश्न ३१— 'रश्मि' नामक काव्य की रचना किस कवि ने की है?

उत्तर— 'रश्मि' नामक काव्य की रचना कवियित्री महादेवी वर्मा ने की है।

प्रश्न ३२— 'नीरजा' नामक काव्य की रचना किस कवि ने की है?

उत्तर— 'नीरजा' नामक काव्य की रचना कवियित्री महादेवी वर्मा ने की है।

प्रश्न ३२— 'दीप शिखा' नामक काव्य की रचना किस कवि ने की है ?

उत्तर— 'दीप शिखा' नामक काव्य की रचना कवियित्री महादेवी वर्मा ने की है।

प्रश्न ३३— 'आँगन के पार' नामक काव्य की रचना किस कवि ने की है ?

उत्तर— 'आँगन के पार' नामक काव्य की रचना कवि श्री सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' ने की है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रश्न ३४– 'हरी घास पर क्षण भर' नामक काव्य की रचना किस कवि ने की है ?

उत्तर– 'हरी घास पर क्षण भर' नामक काव्य की रचना कवि श्री सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' ने की है।

प्रश्न ३५– 'इन्द्र धनु' नामक काव्य की रचना किस कवि ने की है ?

उत्तर– 'इन्द्र धनु' नामक काव्य की रचना कवि श्री सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' ने की है।

प्रश्न ३६– 'कितनी नावों में कितनी बार' नामक काव्य की रचना किस कवि ने की है ?

उत्तर– 'कितनी नावों में कितनी बार' नामक काव्य की रचना कवि श्री सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' ने की है।

प्रश्न ३७– 'बावरा अहेरी' नामक काव्य की रचना किस कवि ने की है ?

उत्तर– 'बावरा अहेरी' नामक काव्य की रचना कवि श्री सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' ने की है।

प्रश्न ३८– 'पहले मैं सन्नाटा हूँ' नामक काव्य की रचना किस कवि ने की है ?

उत्तर– 'पहले मैं सन्नाटा हूँ' नामक काव्य की रचना कवि श्री सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' ने की है।

प्रश्न ३९– 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' नामक काव्य की रचना किस कवि ने की है ?

उत्तर– 'चाँद का मुँह टेढा है' नामक काव्य की रचना कवि श्री गजानन माधव 'मुक्तिबोध' ने की है।

प्रश्न ४०– 'गीत फरोस' नामक काव्य की रचना किस कवि ने की है ?

उत्तर– 'गीत फरोस' नामक काव्य की रचना कवि श्री भवानी प्रसाद मिश्र ने की है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रश्न ४१— 'शाम को एक थकी लड़की' नामक काव्य की रचना किस कवि ने की है ?

उत्तर— 'शाम को एक थकी लड़की' नामक काव्य कवि श्री धर्मवीर भारती की रचना है।

प्रश्न ४२— निम्नलिखित कवियों में 'प्रियप्रवास' नामक काव्य किस कवि की कृति है—

अयोध्या सिंह उपाध्याय, जयशंकर प्रसाद, मैथिलीशरण गुप्त,

उत्तर— 'प्रिय प्रवास' काव्य कवि श्री अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की कृति है।

प्रश्न ४३— निम्नलिखित कवियों में 'साकेत' नामक काव्य किस कवि की कृति है—

जयशंकर प्रसाद, मैथिलीशरण गुप्त, अयोध्या सिंह उपाध्याय

उत्तर— 'साकेत' नामक काव्य कवि श्री मैथिलीशरण गुप्त की कृति है।

प्रश्न ४४— निम्नलिखित कवियों में 'भारत भारती' नामक काव्य किस कवि की रचना है—

अयोध्या सिंह उपाध्याय, जयशंकर प्रसाद, मैथिलीशरण गुप्त

उत्तर— 'भारत भारती' नामक काव्य कवि श्री मैथिलीशरण गुप्त की रचना है।

प्रश्न ४५— निम्नलिखित कवियों में 'पंचवटी' नामक काव्य किस कवि की रचना है—

जयशंकर प्रसाद, मैथिलीशरण गुप्त, अयोध्यासिंह उपाध्याय

उत्तर— 'पंचवटी' नामक काव्य कवि श्री मैथिलीशरण गुप्त की रचना है।

प्रश्न ४६— निम्नलिखित कवियों में 'द्वापर' नामक काव्य किस कवि की रचना है—

मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, अयोध्या सिंह उपाध्याय

उत्तर— 'द्वापर' नामक काव्य कवि श्री मैथिलीशरण गुप्त की रचना है।

प्रश्न ४७— निम्नलिखित कवियों में 'कामायनी' नामक काव्य की रचना किस कवि ने की है—

मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, अयोध्या सिंह उपाध्याय

उत्तर— 'कामायनी' नामक काव्य के रचयिता कवि श्री जयशंकर प्रसाद हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रश्न ४८— निम्नलिखित कवियों में 'लहर' नामक काव्य की रचना किस कवि ने की है—

जयशंकर प्रसाद, मैथिलीशरण गुप्त, अयोध्या सिंह उपाध्याय

उत्तर— 'लहर' नामक काव्य के रचयिता कवि श्री जयशंकर प्रसाद हैं।

प्रश्न ४९— निम्नलिखित कवियों में 'आँसू' नामक काव्य की रचना किस कवि ने की है ?

उत्तर— 'आँसू' नामक काव्य के रचयिता कवि श्री जयशंकर प्रसाद हैं।

प्रश्न ५०— निम्नलिखित कवियों में 'गीतिका' नामक काव्य की रचना किस कवि ने की है—

जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', मैथिलीशरण गुप्त

उत्तर— 'गीतिका' नामक काव्य की रचना कवि श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ने की है।

प्रश्न ५१— निम्नलिखित कवियों में 'अपरा' नामक काव्य की रचना किस कवि ने की है—

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद

उत्तर— 'अपरा' नामक काव्य की रचना कवि श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ने की है।

प्रश्न ५२— निम्नलिखित कवियों में 'रश्मि' नामक काव्य की रचना किस कवि ने की है—

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानन्दन पन्त, महादेवी वर्मा

उत्तर— 'रश्मि' नामक काव्य की रचना कवयित्री श्रीमती महादेवी वर्मा ने की है।

प्रश्न ५३— निम्नलिखित कवियों में 'वीणा' नामक काव्य की रचना किस कवि ने की है—

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', महादेवी वर्मा, सुमित्रानन्दन पन्त,

उत्तर— 'वीणा' नामक काव्य की रचना कवि श्री सुमित्रानन्दन पन्त ने की है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रश्न ५४– निम्नलिखित कवियों में 'आँगन के पार' नामक काव्य की रचना किस कवि ने की है–

अज्ञेय, गजानन माधव मुक्तिबोध, धर्मवीर भारती

उत्तर– 'आँगन के पार' नामक काव्य की रचना श्री सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' ने की है।

प्रश्न ५५– निम्नलिखित कवियों में 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' नामक काव्य की रचना किस कवि ने की है–

गजानन माधव मुक्तिबोध, भवानी प्रसाद, धर्मवीर भारती

उत्तर– 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' नामक काव्य की रचना कवि श्री गजानन माधव मुक्तिबोध ने की है।

❖❖❖

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मनोरमा-रत्नविमर्शः । केशवदेव तिवारी । (१-२ भाग)
महाभाष्यनवाह्निकीयालोचनम् । (नवाह्निक-प्रश्नोत्तरी) विजयमित्र शास्त्री
मालविकाग्निमित्र-रहस्यम् । डॉ. बालगोविन्द झा
मीमांसापरिभाषा सोपानम् । डॉ. शिवप्रसाद द्विवेदी
मुक्तावली-प्रकाश । (न्यायसिद्धान्तमुक्तावली-प्रश्नो.) राजेन्द्रप्रसाद कोठ्यारी
मुद्राराक्षस-विवेकः । लोकमणि दाहाल
मृच्छकटिक-सोपानम् । डॉ. नरेश झा
मेघदूत-तत्वालोकः । अशोकचन्द्र गौड़ शास्त्री
रघुवंश-रहस्यम् । रामप्रसाद त्रिपाठी । १-३ सर्ग, ६-७ सर्ग, १३-१४ सर्ग
रत्नावलीनाटिका सोपानम् । डॉ. शिवप्रसाद द्विवेदी
रसगङ्गाधर-सारः । डॉ. नरेश झा
लघुशब्देन्दुशेखर-सोपानम् । डॉ. शिवप्रसाद द्विवेदी
लघुसिद्धान्तकौमुदी-चन्द्रिका । आचार्य विजयमित्र शास्त्री
वक्रोक्तिजीवित-दीपिका । डॉ. नरेश झा
वाक्यपदीय-प्रकाशिका । (ब्रह्मकाण्ड) । डॉ. सुरेशचन्द्र शर्मा
वासवदत्ता-रहस्यम् । डॉ. शिवप्रसाद द्विवेदी
वेणीसंहार-रहस्यम् । पं. परमेश्वरदीन पाण्डेय
वेदान्तपरिभाषा-सौरभम् । आचार्य शिवप्रसाद द्विवेदी
वेदान्तसार-प्रदीपः । श्री राजेन्द्रप्रसाद कोठ्यारी
वैदिकसाहित्येतिहास-सोपानम् । डॉ. शिवप्रसाद द्विवेदी
वैयाकरणभूषणसार-दीपिका । श्री रामकिशोर त्रिपाठी
वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी-चन्द्रिका । शास्त्री एवं त्रिपाठी । (१-४ खण्ड) सम्पूर्ण
वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जूषा-रहस्यम् । स्वामी रामेश्वर पुरी
वृत्तरत्नाकर-दीपिका । पं. वेदव्यास शुक्ल
व्यक्तिविवेकप्रश्नोत्तरीः । (१-२ विमर्श) कोठ्यारी एवं द्विवेदी
व्याकरणशास्त्रस्येतिहासः । डॉ. ब्रह्मानन्द त्रिपाठी
शाकुन्तल-रहस्यम् । त्रिलोकीनाथ द्विवेदी
शिवराजविजय-दीपिका । पं. वेदव्यास शुक्ल । प्रथम विराम
शिशुपालवध-रहस्यम् । श्री अशोकचन्द्र गौड़ शास्त्री । १-४ सर्ग
संस्कृतसाहित्येतिहास-कुञ्जिका । आचार्य परमानन्द शास्त्री
सांख्यकारिकादर्शः । राजेन्द्रप्रसाद कोठ्यारी
साहित्यदर्पणालोकः । रामजीलाल शर्मा । (१-६ परि.; ७-१० परि.) सम्पूर्ण
साहित्यशास्त्रीयोनिबन्धेतिहासः । वेदव्यास शुक्ल ।
सिन्धुवादवृत्त-रहस्यम् । डॉ कृष्णदेव प्रसाद
स्वरवैदिकी-प्रकाशः । डॉ. बालगोविन्द झा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भारतवर्ष के प्राय: सभी विश्वविद्यालयों
(सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी;
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, दिल्ली;
जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी;
अवधेशप्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा;
पूर्वाञ्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर;
गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर इत्यादि)

एवं

समस्त संस्कृत शिक्षा-संस्थानों (माध्यमिक संस्कृत बोर्ड इत्यादि) के परीक्षा पाठ्य-क्रम में निर्धारित पाठ्य-पुस्तकें एवं प्रश्नोत्तरियाँ निम्न स्थानों पर उपलब्ध हैं—

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
के. 37/117 गोपालमन्दिर लेन
पो. बा. नं. 1129,
वाराणसी 221001
दूरभाष : (0542) 2335263

चौखम्बा पब्लिशिंग हाउस
4697/2, भू-तल (ग्राउण्ड फ्लोर)
गली नं. 21-ए, अंसारी रोड
दरियागंज, नई दिल्ली 110002
दूरभाष : (011) 23286537

❖

चौखम्बा विद्याभवन
चौक (बैंक ऑफ बड़ोदा भवन के पीछे)
पो. बा. नं. 1069,
वाराणसी 221001
दूरभाष : 2420404

चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान
38 यू. ए. बंगलो रोड, जवाहर नगर
पो. बा. नं. 2113
दिल्ली 110007
दूरभाष : 23856391

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh